नवम्बर– 2024, वर्ष 33, अंक 64

उत्तर प्रदेश संदेश

पंचायती राज विभाग
उत्तर प्रदेश

जन सहभागिता से
ग्राम्य विकास

उत्तर प्रदेश मातृभूमि योजना

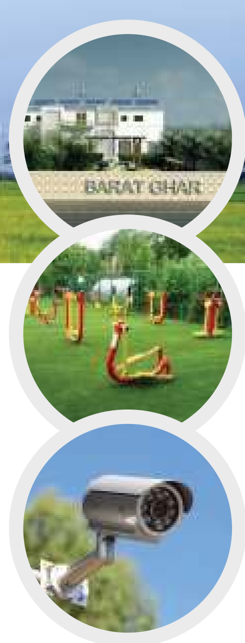

विवरण

- उत्तर प्रदेश मातृभूमि योजनांतर्गत कोई व्यक्ति/व्यक्तियों के समूह/एन.आर.आई./ एन.जी.ओ./निजी संस्था ग्राम पंचायतों में पंचायती राज अधिनियम की धारा 15 के अंतर्गत अनुमन्य विकास कार्य एवं अवस्थापना सुविधाएं विकसित करा सकते हैं।
- कार्य की लागत की 60% धनराशि सहयोगकर्ता द्वारा एवं 40% धनराशि राज्य सरकार द्वारा वहन की जाएगी।
- योजना का नाम सहयोगकर्ता की इच्छानुसार रखा जाएगा।

उद्देश्य

- उत्तर प्रदेश के मूल निवासियों को मातृभूमि के विकास से जुड़ने का अवसर प्रदान करना।
- ग्रामीण क्षेत्रों का विकास।
- निजी निवेश एवं नियमित अनुश्रवण से कार्यों की गुणवत्ता में वृद्धि करना।

प्रक्रिया

- सहयोगकर्ता को योजना की वेबसाइट **https://mbhumi.upprd.in/Registration/AuthorRegistration** पर अपने मोबाइल नम्बर एवं ई-मेल के माध्यम से पंजीकरण कर व्यक्तिगत यूजर आई.डी. एवं पासवर्ड प्राप्त करना होगा।
- **Register your project** पर व्यक्तिगत व योजना का विवरण देना होगा।
- **View all projects** पर जाकर **Take action** पर क्लिक कर **Pay now** की प्रक्रिया पूरी करनी होगी।
- सहयोगकर्ता अपने पंजीकृत कार्य के सापेक्ष 60% या उससे अधिक का भी आर्थिक सहयोग कर सकते हैं।

प्रस्तावित निर्माण कार्य

• स्कूल/इंटर कॉलेज की कक्षाएं व स्मार्ट क्लास • सामुदायिक भवन/बारात घर • प्राथमिक चिकित्सा केंद्र, हॉस्पिटल • आंगनबाड़ी केंद्र • पुस्तकालय/सभागार • व्यायामशाला/ओपन जिम • सी.सी.टी.वी./ सर्विलांस सिस्टम • शिल्पकारों के लिए अवस्थापना सुविधाएं • अंत्येष्टि स्थल • तालाब का सौंदर्यीकरण • जल संरक्षण का कार्य • बस स्टैण्ड/यात्री शेड • स्ट्रीट लाइट/एल.ई.डी. लाइट • फायर सर्विस स्टेशन की स्थापना • अन्य विकास कार्य

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें

https://mbhumi.upprd.in/ | matribhumi.up@gmail.com, up.panchayatiraj@gmail.com | 8127947062/7991949673

पंचायती राज विभाग, उत्तर प्रदेश

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश

नवम्बर-2024, वर्ष 33, अंक 64

उत्तर प्रदेश

संदेश

संरक्षक एवं मार्गदर्शक :

संजय प्रसाद

प्रमुख सचिव, सूचना

❖

प्रकाशक एवं स्वत्वाधिकारी :

शिशिर

सूचना निदेशक

❖

सम्पादकीय परामर्श :

अंशुमान राम त्रिपाठी

अपर निदेशक, सूचना

❖

डॉ. मधु ताम्बे

उपनिदेशक सूचना

❖

डॉ. जितेन्द्र प्रताप सिंह

सहायक निदेशक, सूचना

❖

प्रभारी सम्पादक :

दिनेश कुमार गुप्ता

उपसम्पादक, सूचना

सम्पादकीय संपर्क : सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, पं. दीनदयाल उपाध्याय सूचना परिसर, पार्क रोड, लखनऊ

ईमेल : upsandesh20@gmail.com

दूरभाष कार्यालय : ई.पी.ए.बी.एक्स 0522–2239132–33, 9412674759, 7705800978

उत्तर प्रदेश सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग द्वारा प्रकाशित

भारत सरकार के रजिस्ट्रार ऑफ न्यूज पेपर्स की रजिस्ट्री संख्या : 55884/91

प्रकाशित सामग्री में विभिन्न लेखकों के दृष्टिकोण एवं विचार से सूचना विभाग की सहमति अनिवार्य नहीं हैं। लेखों में प्रयुक्त आंकड़े अनन्तिम हो सकते हैं।

इस अंक में

- कोई सपना ऐसा नहीं, जो पूरा न हो सके — 3
  -नरेन्द्र मोदी
- दुनिया देखेगी महाकुम्भ की आस्था — 6
  -सुनील राय
- प्रयागराज महाकुम्भ 2025 का आयोजन — 12
  -रंजना मिश्रा
- प्रयागराज महाकुम्भ की तैयारियाँ — 16
  -शिव शंकर गोस्वामी
- टूरिस्ट हब बना उत्तर प्रदेश — 20
  -प्रद्युम्न तिवारी
- योगी के सपनों का कुम्भ — 24
  -चित्रांशी
- सामाजिक समरसता का संदेश देती है वाल्मीकि रामायण — 27
  -डॉ. सौरभ मालवीय
- महाकुम्भ में दिखेगी सांस्कृतिक विरासत की झलक — 30
  -ए.के. अस्थाना

सम्पादकीय

उत्तर प्रदेश के लोकप्रिय मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ अपनी सुनियोजित और कुशल कार्यप्रणाली के लिए जाने जाते हैं। बच्चों के प्रति उनका विशेष स्नेह हमें विभिन्न कार्यक्रमों में दिखाई देता रहता है। हाल ही में उन्होंने प्रदेश में पी.एम. पोषण योजना के तहत कक्षा 1 से 8 तक के 1.74 करोड़ बच्चों को पौष्टिक भोजन के साथ पौष्टिक स्नैक्स भी उपलब्ध करवाने का महत्वपूर्ण निर्णय लिया है। बेसिक और जूनियर हाईस्कूल के बच्चों के समग्र विकास के लिए यह पौष्टिक स्नैक्स बच्चों को विशेष साप्ताहिक पोषण कार्यक्रम के तहत दिए जायेंगे। इसमें मूंगफली की चिक्की, बाजरे के लड्डू और भुना चना आदि शामिल हैं। सरकार ने मध्याह्न भोजन को और अधिक प्रभावी और लाभकारी बनाने के लिए यह योजना लागू की है यह पहल बच्चों के शारीरिक विकास को बढ़ावा देने में अहम् भूमिका निभाएगी। इसके लिए वर्तमान सरकार करीब 95 करोड़ रुपये खर्च करेगी। छात्रों को पौष्टिक स्नैक्स का लाभ देने के लिए प्रदेश भर में 3.72 लाख रसोइयों को नियुक्त किया गया है। इन रसोइयों को नियमित प्रशिक्षण भी दिया जा रहा है ताकि वे बच्चों के स्वास्थ्य को देखते हुए उनके लिए पौष्टिक और भोजन तैयार कर सके।

लखनऊ में 9 नवम्बर से गोमती रिवरफ्रन्ट पर गोमती पुस्तक मेले का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने किया। इस पुस्तक मेले में 200 से अधिक प्रकाशकों ने भाग लिया। इस मौके पर पहली बार प्रदेश में इण्टरनेशनल फिल्म फेस्टिवल का भी आयोजन किया गया। इस आयोजन को मुख्यमंत्री ने आर्ट, कल्चर और लिट्रेचर का संगम बताया। सोशल मीडिया और इण्टरनेट के तेज़ी से भागते समय में इस तरह के पुस्तक मेलों में ठहर कर सोचने समझने और संवाद करने का मौका तो मिलता ही है साथ ही लेखकों से रूबरू होने और बहुत कुछ सीखने को मिलता है।

अंक कैसे लग रहे हैं अपनी प्रतिक्रियाओं से अवगत कराते रहियेगा।

सम्पादक

कोई सपना ऐसा नहीं, जो पूरा न हो सके

—नरेन्द्र मोदी

रतन टाटा के निधन को आज एक महीना हो रहा है। लेकिन वह उन जिंदगियों और सपनों में हमेशा जीवित रहेंगे, जिन्हें उन्होंने सहारा दिया। भारत को एक बेहतर, सहृदय और उम्मीदों से भरी भूमि बनाने के लिए आने वाली पीढ़ियां उनकी सदैव आभारी रहेंगी।

आज रतन टाटा जी के निधन को एक महीना हो रहा है। पिछले महीने आज के ही दिन जब मुझे उनके गुजरने की खबर मिली, तो मैं उस समय आसियान समिट के लिए निकलने की तैयारी में था। रतन टाटा जी के हमसे दूर चले जाने की वेदना अब भी मन में हैं। इस पीड़ा को भुला पाना आसान नहीं है। रतन टाटा जी के तौर पर भारत ने अपना एक महान सपूत... एक अमूल्य रत्न खो दिया है।

आज भी शहरों, कस्बों से लेकर गांवों तक, लोग उनकी कमी को गहराई से महसूस कर रहे हैं। यह हम सबका दुख साझा हैं। चाहे कोई उद्योगपति हो, उभरता उद्यमी हो या कोई प्रोफेशनल हो, हर किसी को उनके निधन से दुख हुआ है। पर्यावरण रक्षा से जुड़े लोग, समाज सेवा से जुड़े लोग भी उनके निधन से उतने ही दुखी हैं। और यह दुख हम सिर्फ भारत में ही नहीं, बल्कि दुनिया भर में महसूस कर रहे हैं। युवाओं के लिए वह प्रेरणास्रोत थे। उनका जीवन और व्यक्तित्व हमें याद दिलाता है कि कोई सपना ऐसा नहीं, जिसे पूरा न किया जा सके। उन्होंने सिखाया कि विनम्र स्वभाव के साथ, दूसरों की मदद करते हुए भी सफलता पाई जा सकती है।

रतन टाटा जी भारतीय उद्यमशीलता की बेहतरीन परंपराओं के प्रतीक थे। वह विश्वसनीयता, उत्कृष्टता और बेहतरीन सेवा जैसे मूल्यों के प्रतिनिधि थे। उनके नेतृत्व में टाटा समूह दुनिया भर में सम्मान, ईमानदारी और विश्वसनीयता का प्रतीक बनकर नई ऊंचाइयों पर पहुंचा। फिर भी उन्होंने अपनी उपलब्धियों को पूरी विनम्रता और सहजता के साथ स्वीकार किया।

दूसरों के सपनों का खुलकर समर्थन और सहयोग करना, यह उनके सबसे शानदार गुणों में से एक था। हाल के वर्षों में, वह भारत के स्टार्टअप इकोसिस्टम का मार्गदर्शन करने और भविष्य की संभावनाओं से भरे उद्यमों में निवेश करने के लिए जाने गए। उन्होंने युवा आंत्रप्रेन्योर की आशाओं और आकांक्षाओं को समझा, साथ ही भारत के भविष्य को आकार देने की उनकी क्षमता को पहचाना। भारत के युवाओं के प्रयासों का समर्थन करके उन्होंने नए सपने देखने वाली नई पीढ़ी को जोखिम लेने और सीमाओं से परे जाने का हौसला दिया। उनके इस कदम ने भारत में इनोवेशन और आंत्राप्रेन्योरशिप की संस्कृति विकसित करने

में बड़ी मदद की है। आने वाले दशकों में हम भारत पर इसका सकारात्मक असर जरूर देखेंगे।

रतन टाटा जी ने हमेशा बेहतरीन क्वालिटी के उत्पाद और सेवा पर जोर दिया और भारतीय उद्यमों को ग्लोबल बेंचमार्क स्थापित करने का रास्ता दिखाया। आज जब भारत 2047 तक विकसित होने के लक्ष्य की ओर बढ़ रहा है, तो हम ग्लोबल बेंचमार्क स्थापित करते हुए ही दुनिया में अपना परचम लहरा सकते हैं। मुझे आशा है कि उनका यह विजन देश की भावी पीढ़ियों को प्रेरित करेगा और भारत वर्ल्ड क्लास क्वालिटी के लिए अपनी पहचान मजबूत करेगा। रतन टाटा जी की महानता बोर्डरूम या सहयोगियों की मदद करने तक ही सीमित नहीं थी। सभी जीव–जंतुओं के प्रति उनके मन में करूणा थी। वह पशुओं के कल्याण पर केंद्रित हर प्रयास को बढ़ावा देते थे। वह अक्सर अपने डॉग्स की तस्वीरें साझा करते थे, जो उनके जीवन का अभिन्न हिस्सा थे। मुझे याद है, जब रतन टाटा जी को लोग आखिरी विदाई देने के लिए उमड़ रहे थे... तो उनका डॉग 'गोवा' भी वहां नम आंखों के साथ पहुंचा था। उनका जीवन याद दिलाता है कि नेतृत्व का आकलन केवल उपलब्धियों से ही नहीं, बल्कि सबसे कमजोर लोगों की देखभाल करने की क्षमता से भी किया जाता है।

आज भी शहरों, कस्बों से लेकर गांवों तक, लोग उनकी कमी को गहराई से महसूस कर रहे हैं। यह हम सबका दुख साझा हैं। चाहे कोई उद्योगपति हो, उभरता उद्यमी हो या कोई प्रोफेशनल हो, हर किसी को उनके निधन से दुख हुआ है। पर्यावरण रक्षा से जुड़े लोग, समाज सेवा से जुड़े लोग भी उनके निधन से उतने ही दुखी हैं। और यह दुख हम सिर्फ भारत में ही नहीं, बल्कि दुनिया भर में महसूस कर रहे हैं। युवाओं के लिए वह प्रेरणास्रोत थे। उनका जीवन और व्यक्तित्व हमें याद दिलाता है कि कोई सपना ऐसा नहीं, जिसे पूरा न किया जा सके। उन्होंने सिखाया कि विनम्र स्वभाव के साथ, दूसरों की मदद करते हुए भी सफलता पाई जा सकती है।

रतन टाटा जी ने हमेशा नेशन फर्स्ट की भावना को सर्वोपरि रखा। 26/11 के आतंकवादी हमलों के बाद उनके द्वारा मुंबई के प्रतिष्ठित ताज होटल को पूरी तत्परता से फिर से खोलना, इस राष्ट्र के एकजुट होकर उठ खड़े होने का प्रतीक था। उनके इस कदम ने बड़ा संदेश दिया कि भारत रुकेगा नहीं... भारत निडर है और आतंकवाद के सामने झुकने से इन्कार करता है।

व्यक्तिगत तौर पर, मुझे पिछले कुछ दशको में उन्हें बेहद करीब से जानने का सौभाग्य मिला। हमने गुजरात में साथ मिलकर काम किया। वहां उनकी कंपनियों द्वारा बड़े पैमाने पर निवेश किया गया। इनमें कई ऐसी परियोजनाएं भी शामिल थीं, जिन्हें लेकर वह बेहद भावुक थे। जब मैं केंद्र सरकार में आया, तो हमारी घनिष्ठ बातचीत जारी रही और वह राष्ट्र–निर्माण के प्रयासों में प्रतिबद्ध भागीदार बने रहे। स्वच्छ भारत मिशन के प्रति उनका उत्साह विशेष रूप से मेरे दिल को छू गया था। वह इस जन आंदोलन के मुखर समर्थक थे। वह समझते थे कि स्वच्छता और स्वस्थ आदतें भारत की प्रगति की दृष्टि से कितनी महत्वपूर्ण हैं। अक्तूबर की शुरुआत में स्वच्छ भारत मिशन की दसवीं वर्षगांठ के लिए उनका वीडियो संदेश मुझे अब भी याद है, जो एक तरह से उनकी अंतिम सार्वजनिक उपस्थितियों में से एक रहा है।

कैंसर के खिलाफ लड़ाई एक और ऐसा लक्ष्य था, जो उनके दिल के करीब था। मुझे दो साल पहले असम का वह कार्यक्रम याद आता है, जहां हमने संयुक्त रूप से राज्य में विभिन्न कैंसर अस्पतालों का उद्घाटन किया था। उस अवसर पर उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा था कि वह अपने जीवन के आखिरी वर्षों को हेल्थ सेक्टर को समर्पित करना चाहते हैं। स्वास्थ्य सेवा एवं कैंसर संबंधी देखभाल को सुलभ और किफायती बनाने के उनके प्रयास इस बात के प्रमाण हैं कि वह बीमारियों से जूझ रहे लोगों के प्रति कितनी गहरी संवेदना रखते थे।

वह राष्ट्र–निर्माण के प्रयासों में प्रतिबद्ध भागीदार बने रहे। स्वच्छ भारत मिशन के प्रति उनका उत्साह विशेष रूप से मेरे दिल को छू गया था। वह इस जन आंदोलन के मुखर समर्थक थे। वह समझते थे कि स्वच्छता और स्वस्थ आदतें भारत की प्रगति की दृष्टि से कितनी महत्वपूर्ण हैं।

मैं उन्हें एक विद्वान के रूप में भी याद करता हूं–वह अक्सर मुझे विभिन्न मुद्दों पर लिखा करते थे, चाहे वे शासन से जुड़े मामले हों, किसी काम की सराहना करना हो या फिर चुनाव में जीत के बाद बधाई संदेश भेजना हो। अभी कुछ सप्ताह पहले, मैं स्पेन के राष्ट्रपति पेड्रो सान्चेज के साथ वडोदरा में था और हमने संयुक्त रूप से एक विमान फैक्टरी का उद्घाटन किया। इस फैक्टरी में सी–295 विमान भारत में बनाए जाएंगे। रतन टाटा जी ने ही इस पर काम शुरू किया था। उस समय मुझे रतन टाटा जी की बहुत कमी महसूस हुई। आज जब हम उन्हें याद कर रहे हैं, तो हमें उस समाज को भी याद रखना है, जिसकी उन्होंने कल्पना की थी। जहां व्यापार, अच्छे कार्यों के लिए एक शक्ति के रूप में काम करे, जहां प्रत्येक व्यक्ति की क्षमता को महत्व दिया जाए और जहां प्रगति का आकलन सभी के कल्याण और खुशी के आधार पर किया जाए। रतन टाटा जी आज भी उन जिंदगियों और सपनों में जीवित हैं, जिन्हें उन्होंने सहारा दिया। भारत को एक बेहतर, सहृदय और उम्मीदों से भरी भूमि बनाने के लिए आने वाली पीढ़ियां उनकी सदैव आभारी रहेंगी। ◆

(साभार–अमर उजाला, 9 नवंबर, 2024
(लेखक–भारत के प्रधानमंत्री हैं)

दुनिया देखेगी महाकुम्भ की आस्था

–सुनील राय

गत 27 नवम्बर को उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने प्रयागराज में महाकुम्भ के कार्यों की समीक्षा की और कहा कि सभी कार्य समय पर पूरे किए जाएं। इस बार मेले में लोक निर्माण विभाग कुल 85 परियोजनाओं पर कार्य कर रहा है। इसमें से लगभग पूरे हो चुके हैं। मेला क्षेत्र में 2 लाख 69 हजार चेकर्ड प्लेट बिछाई गई हैं। गंगा और यमुना नदी पर 3,308 पांटून पुल बनाये गए हैं। मेला क्षेत्र में 488 किलोमीटर की अस्थाई सड़क का निर्माण किया गया है। 12 भाषाओं में डेढ़ हजार साइनेज लगाए गए हैं। 148 पार्किंग बनाई जा रही हैं। नगर निगम प्रयागराज कुल 79 परियोजनाओं पर कार्य कर रहा है। इसमें से लगभग दभी कार्य पूरा हो गया है। मेले को स्वच्छ बनाये रखने के लिए 50 की संख्या में मोबाइल शौचालय लगाए गए हैं। जल निगम कुल 35 परियोजनाओं पर कार्य कर रहा है। जल आपूर्ति के लिए 85 ट्यूबवेल ने कार्य प्रारम्भ कर दिया है। 250 वॉटर एटीएम लगाए जा रहे हैं। एक हजार दो सौ उन्चास किलोमीटर की पेयजल पाइप लाइन बिछाई गई है। सभी सेक्टरों में पानी का छिड़काव शुरू कर दिया गया है।

मेले के दौरान इलाहाबाद संग्रहालय, कलश से टपकती अमृत बूंद के दृश्य को प्रतिकृति के रूप में प्रदर्शित करेगा। इसके साथ ही इलाहाबाद संग्रहालय ने ऐसी वीथिका का निर्माण किया है, जहां वर्ष 1857 से लेकर वर्ष 1947 तक सभी प्रमुख क्रांतिकारियों की गाथा का प्रदर्शन किया गया है। महाकुम्भ के दौरान एक ऐसी प्रदर्शनी का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें चंद्रशेखर आज़ाद की पिस्टल की प्रतिकृति का भी प्रदर्शन किया जाएगा। इसके अलावा संग्रहालय में मौजूद कई प्राचीन हथियारों की प्रतिकृतियां भी देश–विदेश से आने वाले श्रद्धालुओं को आकर्षित करेंगी।

दिन डूबने के बाद मेला क्षेत्र में हर तरफ दूधिया रोशनी देखने को मिलेगी। इसके लिए ऊर्जा विभाग तेज गति से कार्य कर रहा है। मेले में 386 किलोमीटर केबिल बिछाई जा रही है। 67, 026 एलईडी स्ट्रीट लाइट लगाई जा रही हैं। इसके साथ ही 2 हजार हाइब्रीड स्ट्रीट लाइट लगाई जा रही हैं। 2 • 400 केवीए

क्षमता के 85 सब स्टेशन बनाये जा रहे हैं। बारह बरस बाद प्रयागराज में गंगा–यमुना के तट लगने वाले महाकुम्भ की तैयारियां युद्ध स्तर पर चल रही हैं। यह दुनिया का एकमात्र ऐसा आयोजन है जहां करोड़ों लोग बगैर किसी निमंत्रण के पहुंचते हैं। मौनी अमावस्या जिसे कुम्भ दिवस भी कहा जाता है। उस दिन प्रयागराज, दुनिया का सबसे बड़ी आबादी वाला शहर बन जाता है। वर्ष 2025 के जनवरी माह से शुरू होने वाले इस मेले को 4 हजार हेक्टेयर में बसाया जाएगा। अनुमान है कि इस बार 40 से 45 करोड़ श्रद्धालु संगम में डुबकी लगायेंगे। मेला प्रशासन ने यह तय किया है कि इस बार के मेले में कोई भी भूखा नहीं सोयेगा। 2 लाख राशन कार्ड बनाने का लक्ष्य रखा गया है। पूरे मेला क्षेत्र में 160 राशन दुकान आवंटित की जायेगी। प्रयागराज जनपद की शास्त्रीय सीमा में मांस–मदिरा की बिक्री पर रोक रहेगी।

बारह बरस बाद प्रयागराज में गंगा–यमुना के तट लगने वाले महाकुम्भ की तैयारियां युद्ध स्तर पर चल रही हैं। यह दुनिया का एकमात्र ऐसा आयोजन है जहां करोड़ों लोग बगैर किसी निमंत्रण के पहुंचते हैं। मौनी अमावस्या जिसे कुम्भ दिवस भी कहा जाता है। उस दिन प्रयागराज, दुनिया का सबसे बड़ी आबादी वाला शहर बन जाता है।

मेला क्षेत्र में नगर निगम, स्वास्थ्य विभाग, विकास प्राधिकरण, जल शक्ति, ऊर्जा, जल निगम, लोक निर्माण विभाग, पर्यटन एवं परिवहन समेत अन्य विभाग गंगा तट के निर्जन स्थान पर मेला बसाने में जुटे हुए हैं। मेले में आने वाले श्रद्धालुओं को इधर–उधर भटकना न पड़े इसलिए 'महाकुम्भ मेला 2025' एप लॉन्च किया गया है। इस एप पर घाटों और मंदिरों की लोकेशन के साथ–साथ प्रयागराज के प्रमुख धार्मिक स्थलों का विवरण भी उपलब्ध कराया गया है। प्रयागराज के घाटों और धार्मिक स्थलों के सौंदर्यीकरण का कार्य भी प्रगति पर है। सड़क चौड़ीकरण और सुदृढ़ीकरण के कार्य तेजी से किये जा रहे हैं। शहर की प्रमुख सड़कों का चौड़ीकरण 30 नवंबर तक पूरा किया जाना है। प्रयागराज विकास प्राधिकरण 50 परियोजनाओं पर कार्य कर रहा है। इनमें से 4 परियोजनाएं पूरी की जा चुकी हैं। सभी परियोजनाओं को 30 नवंबर तक पूर्ण

करने का लक्ष्य रखा गया है। मेला क्षेत्र में पान्टून पुल बनाने का कार्य शुरू हो चुका है।

इस बार के मेले में प्रमुख आकर्षणों में शामिल हनुमान मंदिर कॉरिडोर का कार्य 10 दिसंबर तक पूरा करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। इसके साथ ही समस्त धार्मिक पर्यटन स्थलों के आसपास भी रोजगार के नए स्रोत विकसित किये जायेंगे। संगम पर नाविक इस बार 'रिवर गाइड' की भूमिका निभायेंगे। पर्यटन विभाग 2 हजार नाविकों को इसका प्रशिक्षण दे रहा है। इसी के साथ ही एक हजार टूर गाइड भी मेले में सक्रिय होंगे। इन लोगों को प्रशिक्षण दिया जा रहा है। पर्यटन विभाग 6 सौ स्ट्रीट वेंडर्स और 6 सौ टैक्सी चालकों को भी प्रशिक्षित कर रहा है। पर्यटन विभाग के इस प्रशिक्षण से 45 हजार से अधिक परिवारों को रोजगार मिलेगा। श्रद्धालुओं और पर्यटकों की सुविधा को देखते हुए कुम्भ मेले में कार्यरत ड्राइवर, नाविक, गाइड और ठेला संचालकों को विशेष तरह के ट्रैक सूट पहनाने की योजना बनाई गई है। इस ट्रैक सूट से इन्हें पहचानना आसान हो जाएगा। ड्राइवर, नाविक, गाइड और ठेला संचालकों के लिए अलग–अलग प्रकार के ट्रैक सूट निर्धारित किए गए हैं।

मेले के दौरान इलाहाबाद संग्रहालय, कलश से टपकती अमृत बूंद के दृश्य को प्रतिकृति के रूप में प्रदर्शित करेगा। इसके साथ ही इलाहाबाद संग्रहालय ने ऐसी वीथिका का निर्माण किया है, जहां वर्ष 1857 से लेकर वर्ष 1947 तक सभी प्रमुख क्रांतिकारियों की गाथा का प्रदर्शन किया गया है। महाकुंभ के दौरान एक ऐसी प्रदर्शनी का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें चंद्रशेखर आज़ाद की पिस्टल की प्रतिकृति का भी प्रदर्शन किया जाएगा। इसके अलावा संग्रहालय में मौजूद कई प्राचीन हथियारों की प्रतिकृतियां भी देश–विदेश से आने वाले श्रद्धालुओं को आकर्षित करेंगी। प्रयागराज में मंदिरों के जीर्णोद्धार का कार्य अब अंतिम चरण में है। मंदिर कॉरिडोर और जीर्णोद्धार

से संबंधित कुल 15 परियोजनाएं ऐसी हैं, जिस पर पर्यटन विभाग कार्य कर रहा है। भारद्वाज कॉरिडोर, मनकामेश्वर मंदिर कॉरिडोर, द्वादश माधव मंदिर, पड़िला महादेव मंदिर, अलोपशंकरी मंदिर समेत 9 अन्य मंदिरों का जीर्णोद्धार लगभग पूर्ण पूरा हो चुका है।

गूगल और महाकुम्भ मेला प्राधिकरण के बीच विशेष नेवीगेशन को लेकर एमओयू साइन किया गया है। इस एमओयू के अनुसार, गूगल महाकुम्भ के लिए विशेष नेविगेशन तैयार करेगा, जिसकी मदद से श्रद्धालु मेला क्षेत्र में अखाड़ों और साधु–संतों की लोकेशन को ट्रैक कर वहां तक आसानी से पहुंच सकेंगे। अपर मेलाधिकारी विवेक चतुर्वेदी ने बताया कि "गूगल ने आज तक किसी अस्थायी कार्यक्रम के लिए नेविगेशन की अनुमति नहीं दी है। यह पहली बार है कि गूगल ने महाकुम्भ की भव्यता और यहां पर पहुंचने वाले लोगों की संख्या को देखते हुए महाकुम्भ मेला क्षेत्र को अपने नेविगेशन मैप में शामिल किया है।"

इस बार रेलवे का अनुमान है कि महाकुम्भ में लगभग 10 करोड़ लोग ट्रेन से प्रयागराज पहुंचेंगे। महाकुम्भ में रेलवे 992 मेला स्पेशल ट्रेन चलाएगा। मौनी अमावस्या के अवसर पर 300 से अधिक मेला स्पेशल ट्रेन संचालित की जायेंगी। महाकुम्भ मेले के दौरान रेलवे स्टेशनों पर 650 सीसीटीवी कैमरों लगाये जायंगे। कैमरे जो एआई तकनीक से चेहरा पहचान लेते हैं। पहली बार ऐसे 100 कैमरे लगाए जाएंगे। ये कैमरे एआई तकनीक की सहायता से किसी व्यक्ति का चेहरा तुरंत पहचान लेते हैं। आवश्यकता पड़ने पर संदिग्ध व्यक्ति को इस कैमरे के माध्यम से तलाश किया जा सकता है। रेलवे के जन संपर्क अधिकारी अमित मालवीय बताया कि ''प्रयागराज के सभी मुख्य स्टेशनों पर ट्रेनों के बहुभाषीय उद्घोषक की व्यवस्था की जा रही है। मेले में देश के विभिन्न प्रान्तों से लोग आते हैं इसलिए हिंदी और अंग्रेजी भाषा के साथ 10 अन्य क्षेत्रीय भाषाओं में उद्घोषक तैनात किये जा रहे हैं। मेले के दौरान रेलवे स्टेशन पर कन्नड़, तमिल, गुजराती, मराठी, तेलगू, मलायालम, बंग्ला, असमिया पंजाबी और उड़िया भाषाओं में उद्घोषणा की जायेगी।''

स्वास्थ्य विभाग की ओर से मेले में उपचार का प्रबंध किया जा रहा है। इसके साथ ही आकस्मिक स्थिति में भी चिकित्सा के प्रबंध किये जा रहे हैं। इस बार स्वास्थ्य विभाग आपात स्थितियों में भीष्म क्यूब का प्रयोग करेगा। संयुक्त निदेशक चिकित्सा स्वास्थ्य, प्रयागराज डॉ. वी.के. मिश्रा ने बताया कि ''भीष्म (बैटलफील्ड हेल्थ इंफॉर्मेशन सिस्टम फॉर मेडिकल सर्विसेज) क्यूब में सर्जिकल सुविधाएं, डायग्नोस्टिक टूल्स और रोगी के देखभाल से संबंधित सभी

इलाज की व्यवस्था कर रहा है। 100 बेड का अस्पताल मेला क्षेत्र के परेड ग्राउंड में निर्माणाधीन है। महाकुम्भ मेला क्षेत्र में श्रद्धालुओं एवं स्नानार्थियों के लिए नेत्र कुम्भ की स्थापना भी की जा रही है। नेत्र शिविर में श्रद्धालुओं को अस्थाई नेत्र देखभाल की सुविधा प्रदान की जायेगी। इस दौरान श्रद्धालुओं की दृष्टि सुधार, मोतियाबिंद सर्जरी और चश्मे का वितरण जैसी सेवाएं प्रदान की जाएंगी।

सुविधाएं उपलब्ध हैं। इसे आपातकालीन परिस्थितियों में ड्रोन से या फिर विमान से एयरड्रॉप किया जा सकता है।'' महाकुम्भ के दौरान देश–विदेश से आने वाले श्रद्धालुओं को देखते हुए 291 एमबीबीएस व स्पेशलिस्ट डॉक्टरों की तैनाती की जा रही है। इसके अलावा 90 आयुर्वेदिक और यूनानी विशेषज्ञ भी तैनात किये जा रहे हैं। स्वास्थ्य विभाग ओपीडी में 10 लाख मरीज और आईपीडी में 10 हजार मरीजों के

महाकुम्भ मेला क्षेत्र में 1.5 लाख से ज्यादा शौचालय स्थापित जायेंगे। डेढ़ लाख शौचालय 15 दिसंबर तक स्थापित करने लक्ष्य रखा गया है। सभी शौचालय में साफ–सफाई और सुरक्षा की मॉनीटरिंग क्यूआर कोड् के माध्यम से की जायेगी। करीब डेढ़ हजार की संख्या में गंगा सेवा दूत शौचालयों की निगरानी करेंगे। मेला क्षेत्र में 10 हजार सफाईकर्मी दिन–रात पूरे महाकुम्भ क्षेत्र को स्वच्छ और साफ–सुथरा बनाये रखेंगे। अखाड़ा परिषद ने मेले में संतों और श्रद्धालुओं से प्लास्टिक और थर्मोकोल से परहेज करने के लिए अपील की है। मेले के दौरान दैनिक जीवन में पत्तल और मिट्टी के बर्तनों को प्रयोग करने के लिए कहा गया है।

पर्यटन विभाग की ओर से फिलहाल 2 हजार घरों में पेइंग गेस्ट सुविधा शुरू करने का लक्ष्य रखा गया है। आवश्यकता पड़ने पर इसकी संख्या और बढ़ाई जा सकती है। पर्यटन मंत्री जयवीर सिंह ने बताया कि ''प्रयागराज में

शिवालय पार्क के पास, अरैल रोड नैनी में डिजिटल कुंभ म्यूजियम बनेगा। इसके लिए 21.38 करोड़ रुपए स्वीकृत हुए हैं, जिसमें से छह करोड़ रुपए जारी किए जा चुके हैं। संग्रहालय का आकार 10 हजार वर्ग मीटर का होगा, जिसमें एक साथ दो से ढाई हजार लोग भ्रमण कर सकेंगे।''

महाकुम्भ में हरियाली को ध्यान में रखते हुए में 2 लाख 71 हजार पौधे रोपित किए जा रहे हैं। इस अभियान के अंतर्गत 29 करोड़ के बजट से 1.49 लाख पौधे रोपित किये जाने हैं। 20 हेक्टेयर में 87 हजार पौधे, सरस्वती हाईटेक सिटी में लगाये जायेंगे। इसके साथ ही टोल प्लाजा स्टाफ अच्छे से व्यवहार करे, इसके लिए प्रशिक्षण दिया जाएगा। टोल प्लाजा पर 3 शिफ्ट में कर्मचारी तैनात किये जायेंगे। शहर में 2,750 सीसीटीवी कैमरे लगाये जा रहे हैं। मेला क्षेत्र में एआई आधारित सीसीटीवी कैमरे भी लगाए जा रहे हैं। मेले में 37,611 पुलिसकर्मी तैनात रहेंगे। मेले को देखते हुए प्रयागराज शहर में 35 रैन बसेरा स्थापित किए जाएंगे। ◆

मो. : 9415132728

प्रयागराज महाकुम्भ 2025 का आयोजन

–रंजना मिश्रा

प्रयागराज महाकुम्भ विश्व का सबसे बड़ा धार्मिक समागम है। यह आयोजन धर्म, संस्कृति और आस्था का एक अद्भुत संगम है। यह भारत की समृद्ध विरासत का प्रतीक है और दुनिया भर के लोगों को आकर्षित करता है। प्रयागराज महाकुम्भ हर बारह वर्ष में एक बार आयोजित किया जाता है। यह हिंदू धर्म का एक महत्वपूर्ण पर्व है, जिसमें करोड़ों श्रद्धालु संगम में डुबकी लगाने के लिए एकत्र होते हैं। संगम के जल को हिंदू धर्म में परम पवित्र माना जाता है। हिंदू धर्म में यह मान्यता है कि संगम में स्नान करने से मनुष्य के पापों का नाश होता है और मोक्ष की प्राप्ति होती है। इसलिए प्रयागराज का महाकुम्भ मेला बहुत ही महत्वपूर्ण है। महाकुम्भ का आयोजन भारतीय संस्कृति का एक जीवंत उदाहरण है। यह आयोजन विभिन्न जातियों, धर्मों और क्षेत्रों के लोगों को एक साथ लाता है। महाकुम्भ स्थानीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देता है और यह हजारों लोगों को रोजगार प्रदान करता है।

प्रयागराज महाकुम्भ विश्व का सबसे बड़ा धार्मिक समागम है। यह आयोजन धर्म, संस्कृति और आस्था का एक अद्भुत संगम है। यह भारत की समृद्ध विरासत का प्रतीक है और दुनिया भर के लोगों को आकर्षित करता है। प्रयागराज महाकुम्भ हर बारह वर्ष में एक बार आयोजित किया जाता है। यह हिंदू धर्म का एक महत्वपूर्ण पर्व है, जिसमें करोड़ों श्रद्धालु संगम में डुबकी लगाने के लिए एकत्र होते हैं।

महाकुम्भ के दौरान, संगम के किनारे विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं, इनमें शाही स्नान, धार्मिक अनुष्ठान, मेले, सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि शामिल हैं। महाकुम्भ का सबसे महत्वपूर्ण आकर्षण शाही स्नान है। महाकुम्भ में कई शाही स्नान होते हैं, जिनमें लाखों श्रद्धालु और विभिन्न अखाड़ों के साधु–संत एक निश्चित तिथि पर संगम में डुबकी लगाते हैं। ये स्नान विशेष तिथियों पर होते हैं और इनका बहुत महत्व होता है। यह एक अत्यंत भव्य और आध्यात्मिक अनुष्ठान होता है। महाकुम्भ के दौरान विभिन्न अखाड़े अपने–अपने ध्वजों को फहराते हैं। यह अखाड़े की शक्ति और परंपरा का प्रतीक होता है। महाकुम्भ के दौरान विभिन्न प्रकार के धार्मिक अनुष्ठान किए जाते हैं। इनमें हवन, यज्ञ, भजन–कीर्तन, कथावाचन आदि शामिल हैं। महाकुम्भ के दौरान विशाल मेले लगते हैं। इन मेलों में देश–विदेश से लोग आते हैं। वे खरीदारी व मनोरंजन करते हैं और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आनंद लेते हैं। महाकुम्भ में संगीत, नृत्य, नाटक और अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। ये कार्यक्रम भारतीय

संस्कृति की विशिष्टता और विविधता को प्रदर्शित करते हैं। महाकुम्भ में कई धर्मसभाएं आयोजित की जाती हैं, जिनमें धर्म गुरु और साधु–संत धार्मिक विषयों पर व्याख्यान देते हैं। विभिन्न अखाड़ों के साधु–संत महाकुम्भ में एकत्र होते हैं। ये अखाड़े अपनी–अपनी परंपराओं और रीति–रिवाजों का प्रदर्शन करते हैं। प्रयागराज महाकुम्भ भारतीय संस्कृति का एक महत्वपूर्ण अंग है। यह लाखों लोगों को एक साथ लाता है और उन्हें धार्मिक और सांस्कृतिक अनुभव प्रदान करता है। लेकिन महाकुम्भ के आयोजन के साथ कई चुनौतियाँ भी जुड़ी हुई हैं। दरअसल महाकुम्भ के दौरान लाखों लोगों की भीड़ एकत्र होती है, जिससे यातायात और सुरक्षा की समस्याएं उत्पन्न होती हैं। इतनी बड़ी संख्या में लोगों के आने से श्रद्धालुओं के लिए आवास की व्यवस्था करना और स्वच्छता बनाए रखना एक बहुत बड़ी चुनौती है। इन चुनौतियों का समाधान करके, हम महाकुम्भ को और अधिक सफल और सुचारू रूप से आयोजित कर सकते हैं। महाकुंभ का मेला क्षेत्र बहुत विस्तृत होता है। यह अस्थायी रूप से बनाया जाता है और इसमें लाखों तीर्थयात्रियों को समायोजित करने की क्षमता होती है। यह क्षेत्र विभिन्न जोन में विभाजित होता है, जिनमें धार्मिक जोन, व्यावसायिक जोन, आवास जोन और सांस्कृतिक जोन शामिल होते हैं। धार्मिक जोन में मंदिर, अखाड़े, और धार्मिक अनुष्ठानों के लिए स्थान होते हैं। व्यावसायिक जोन में तीर्थयात्रियों के लिए खाने–पीने की चीजें, कपड़े, धार्मिक सामान, और अन्य आवश्यक वस्तुएं मिलती हैं। आवास जोन में तीर्थयात्रियों के रहने के लिए अस्थायी आवास बनाए जाते हैं। सांस्कृतिक जोन में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है।

महाकुम्भ जैसे विशाल धार्मिक आयोजन में लाखों श्रद्धालुओं की सुविधा और सुरक्षा के लिए व्यापक व्यवस्थाएं की जाती हैं। यातायात व्यवस्था के अंतर्गत, श्रद्धालुओं के आवागमन के लिए सड़कों का विस्तार और मरम्मत की जाती है। यातायात के एकमुश्त प्रवाह को रोकने के लिए डायवर्जन लगाना और पर्याप्त पार्किंग की व्यवस्था करना जरूरी होता है। इसके अलावा अतिरिक्त ट्रेनें चलाने, स्टेशनों पर भीड़भाड़ को नियंत्रित करने और श्रद्धालुओं को उनके गंतव्य तक पहुंचाने के लिए बस सेवाएं शुरू की जाती हैं। साथ ही निकटतम हवाई अड्डों पर उड़ानों की संख्या बढ़ाने और हवाई अड्डे से महाकुम्भ स्थल तक परिवहन की व्यवस्था को सुचारू रूप से चलाने पर भी ध्यान दिया जाता है। आवास व्यवस्था के अंतर्गत, श्रद्धालुओं के लिए अस्थायी आवास जैसे कि टेंट सिटी, धर्मशालाएं और छात्रावासों की व्यवस्था करना शामिल होता है। इन आवासों में स्वच्छ पेयजल, शौचालय और स्नानगृह की सुविधा सुनिश्चित की जाती है। स्वास्थ्य व्यवस्था के अंतर्गत, चिकित्सा शिविर लगाकर श्रद्धालुओं को निःशुल्क चिकित्सा सुविधाएं उपलब्ध कराई जाती हैं। इसके अलावा आवश्यक दवाओं की उपलब्धता भी सुनिश्चित की जाती है। आपातकालीन स्थिति में तत्काल चिकित्सा सहायता के लिए एंबुलेंस सेवाएं उपलब्ध कराई जाती हैं।

सुरक्षा व्यवस्था के अंतर्गत, महाकुम्भ में पर्याप्त संख्या में पुलिस बल तैनात करना, सुरक्षा व्यवस्था को मजबूत करना, भीड़भाड़ वाले क्षेत्रों में सीसीटीवी कैमरे लगाना और आतंकवाद के खतरे को देखते हुए सुरक्षा उपायों को और अधिक सख्त करना एक बड़ी जिम्मेदारी होती है। स्वच्छता व्यवस्था के अंतर्गत, कूड़ेदान लगाना, कूड़े को नियमित रूप से उठाना, पर्याप्त संख्या में स्वच्छ शौचालयों की व्यवस्था करना और स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता सुनिश्चित करना भी बेहद जरूरी है। विद्युत व्यवस्था के अंतर्गत, पूरे मेला क्षेत्र में 24 घंटे बिजली की आपूर्ति सुनिश्चित की जाती है तथा रात के समय मेला क्षेत्र को रोशन करने के लिए स्ट्रीट लाइटें लगाई जाती हैं। संचार व्यवस्था के अंतर्गत, मोबाइल नेटवर्क को मजबूत करना और इंटरनेट सुविधा उपलब्ध कराना भी बहुत जरूरी है, ताकि श्रद्धालु अपने परिवार और दोस्तों के संपर्क में रह सकें और ऑनलाइन जानकारी प्राप्त कर सकें। आपदा प्रबंधन के अंतर्गत, किसी भी आपदा की स्थिति से निपटने के लिए आपदा राहत दल और उपकरणों को तैयार रखना बहुत जरूरी होता है। इन सभी व्यवस्थाओं के अलावा, श्रद्धालुओं के धार्मिक गतिविधियों में शामिल होने के लिए पर्याप्त जगह, धार्मिक ग्रंथों की उपलब्धता और विभिन्न धार्मिक अनुष्ठानों का आयोजन करना भी बेहद महत्वपूर्ण होता है। महाकुम्भ एक विशाल आयोजन होता है और इसकी सफलता सुनिश्चित करने के लिए सभी स्तरों पर समन्वय और सहयोग की अत्यधिक आवश्यकता होती है।

महाकुम्भ मेले का इतिहास बहुत पुराना है। इसका संबंध समुद्र मंथन से माना जाता है। समुद्र मंथन की कहानी के अनुसार, देवताओं और राक्षसों के बीच अमृत के घड़े के लिए 12 दिनों तक लड़ाई चली थी। 12 दिनों का समय मनुष्यों के लिए 12 साल के बराबर माना जाता है। इसलिए हर 12 साल में कुम्भ मेले का आयोजन किया जाता है। हिंदू धर्म की मान्यता है कि जब बृहस्पति कुम्भ राशि में और सूर्य मेष राशि में प्रवेश करता है, तब कुम्भ मेले का आयोजन होता है। पौराणिक कथाओं के अनुसार, भगवान विष्णु समुद्र मंथन से निकले हुए अमृत से भरे कुम्भ को लेकर जा रहे थे, लेकिन असुरों से छीना–झपटी में अमृत की चार बूंदें पृथ्वी लोक पर आ गिरी थीं। ये बूंदें प्रयाग, हरिद्वार, नासिक, और उज्जैन में गिरी थीं। इसलिए इन चारों जगहों पर कुम्भ मेले का आयोजन होता है। कुम्भ मेले को यूनेस्को ने 'मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत' में शामिल किया है।

महाकुम्भ मेले का इतिहास बहुत पुराना है। इसका संबंध समुद्र मंथन से माना जाता है। समुद्र मंथन की कहानी के अनुसार, देवताओं और राक्षसों के बीच अमृत के घड़े के लिए 12 दिनों तक लड़ाई चली थी। 12 दिनों का समय मनुष्यों के लिए 12 साल के बराबर माना जाता है। इसलिए हर 12 साल में कुम्भ मेले का आयोजन किया जाता है। हिंदू धर्म की मान्यता है कि जब बृहस्पति कुम्भ राशि में और सूर्य मेष राशि में प्रवेश करता है, तब कुम्भ मेले का आयोजन होता है। पौराणिक कथाओं के अनुसार, भगवान विष्णु समुद्र मंथन से निकले हुए अमृत से भरे कुम्भ को लेकर जा रहे थे, लेकिन असुरों से छीना–झपटी में अमृत की चार बूंदें पृथ्वी लोक पर आ गिरी थीं। ये बूंदें प्रयाग, हरिद्वार, नासिक, और उज्जैन में गिरी थीं। इसलिए इन चारों जगहों पर कुम्भ मेले का आयोजन होता है।

इस बार साल 2025 में उत्तर प्रदेश में, प्रयागराज में महाकुम्भ मेला लगने वाला है। प्रयागराज महाकुम्भ 13 जनवरी 2025 से शुरू होगा और 25 फरवरी, 2025 तक चलेगा। दरअसल महाकुम्भ मेला 45 दिनों तक चलता है। इसके लिए उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने बड़े पैमाने पर तैयारी शुरू कर दी है। महाकुम्भ 2025 के लिए प्रयागराज का विकास किया जा रहा है। इसके तहत घाटों और मंदिरों का भी विकास हो रहा है। इससे पहले प्रयागराज में साल 2013 में महाकुम्भ लगा था। साल 2025 में होने वाले प्रयागराज महाकुम्भ में चार हजार हेक्टेयर क्षेत्रफल में मेला होगा और 1900 हेक्टेयर क्षेत्रफल में पार्किंग बनाई जाएगी। इस बार के

प्रयागराज महाकुम्भ मेले में 10 करोड़ से ज्यादा श्रद्धालुओं के भाग लेने की उम्मीद है। प्रयागराज में इस बार लगभग साढ़े तीन करोड़ से ज्यादा श्रद्धालुओं के रोडवेज बसों से पहुंचने का अनुमान जताया जा रहा है। इसमें आने वाले श्रद्धालुओं की सुरक्षा के लिए अभूतपूर्व व्यवस्था की जा रही है। संगम में स्नान करने वालों को डूबने से बचाने के लिए जल पुलिस और अंडरवाटर ड्रोन तैनात किए जाएंगे। ये ड्रोन एक मिनट में डेढ़ किलोमीटर की दूरी तय कर सकेंगे और 300 मीटर के दायरे में डूबने वाले व्यक्ति को खोजने में सक्षम होंगे। इस महाकुम्भ में भीड़ को नियंत्रित करने के लिए पार्किंग व्यवस्था को शहर से बाहर रखा जा रहा है। हाल ही में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने शारदीय नवरात्रि के दौरान, आगामी महाकुम्भ 2025 का लोगो, वेबसाइट और ऐप लांच किया है। इस लोगो में धार्मिक और आर्थिक समृद्धि के प्रतीक 'अमृत कलश' को दर्शाया गया है, जो समुद्र मंथन की पौराणिक कथा से जुड़ा हुआ है। लोगो में गंगा, यमुना और सरस्वती नदियों के त्रिवेणी संगम को प्रमुख रूप से दर्शाया गया है। देशभर के अखाड़ों के साधु–संत, नागा संन्यासी, महामंडलेश्वर, महंत और मठाधीश 12 अक्तूबर, 2024 को विजयदशमी के शुभ मुहूर्त पर प्रयागराज के लिए प्रस्थान करेंगे। अखाड़े के रमता पंच, नागा संन्यासी, मठाधीश, महामंडलेश्वर, आश्रमधारी शहर से बाहर रामपुर में स्थित सिद्ध हनुमान मंदिर परिसर में शरद पूर्णिमा पर 16 अक्टूबर को पहुंच जाएंगे। तीन नवंबर को यम द्वितीया पर हाथी–घोड़े, बग्घी, सुसज्जित रथों और पालकियों के साथ जूना अखाड़े की पेशवाई संगम की रेती पर लगने वाले कुंभ नगर के शिविर में देवता के साथ प्रवेश करेगी। 23 नवंबर को कुंभ मेला छावनी में काल भैरव अष्टमी के दिन आवंटित भूमि का पूजन कर धर्म ध्वजा स्थापित की जाएगी। अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद ने कुम्भ और महाकुम्भ के दौरान इस्तेमाल होने वाले उर्दू–फारसीनिष्ठ शब्दों को हटाकर उनकी जगह हिंदी–संस्कृत शब्दों को अपनाने का फैसला किया है। यह फैसला हिंदू धर्म की शुद्धता और भारतीय संस्कृति के पुनरुत्थान की दिशा में एक कदम माना जा रहा है। हालांकि कुछ लोगों का मानना है कि भाषा एक जीवंत चीज है और समय के साथ बदलती रहती है। गाय को राष्ट्रमाता घोषित करने का प्रस्ताव, हिंदू धर्म में गाय की पवित्रता को दर्शाता है। यह प्रस्ताव गौ रक्षा के मुद्दे को और अधिक बल देगा। मंदिरों में सरकारी हस्तक्षेप हटाने का प्रस्ताव मंदिरों की स्वायत्तता को सुनिश्चित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। हालांकि कुछ लोगों का मानना है कि मंदिरों में सरकारी हस्तक्षेप हटाने से धार्मिक स्थलों पर राजनीति का प्रभाव बढ़ सकता है। समान नागरिक संहिता लागू करने का प्रस्ताव देश में एक समान कानून व्यवस्था लाने का प्रयास है, जो बहुत ही महत्वपूर्ण है। ◆

मो. : 9336111418

प्रयागराज महाकुम्भ की तैयारियाँ

—शिव शंकर गोस्वामी

विश्व का सबसे बड़ा मेला अगले साल उत्तर प्रदेश की सांस्कृतिक राजधानी प्रयागराज में लगने जा रहा है। महाकुंभ के नाम से प्रसिद्ध इस मेले में लगभग 25 करोड़ के आसपास श्रद्धालुओं के आने की संभावना है। इसी के दृष्टिगत प्रयागराज में त्रिवेणी संगम पर तैयारी चल रही हैं। तैयारी की समीक्षा मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने विगत 6 अक्टूबर को संगम तट पर की और कई स्थलों का निरीक्षण भी किया। उनके साथ उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य, कैबिनेट मंत्री स्वतंत्र देव सिंह, ए.के. शर्मा, नंद गोपाल गुप्ता नंदी, जयवीर सिंह, जिला पंचायत अध्यक्ष वीके सिंह, महापौर उमेश चंद्र, गणेश केसरवानी, विधायक सिद्धार्थ नाथ सिंह, हर्षवर्धन बाजपेई, सांसद प्रवीण पटेल और मुख्य सचिव मनोज कुमार सिंह तमाम विभागीय सचिव एवं प्रमुख सचिव मौजूद थे।

समीक्षा के साथ मुख्यमंत्री ने सभी अधिकारियों को निर्देश दिया है की सारी तैयारियां 15 दिसंबर, 2024 तक पूरी कर ली जाए।

इस बार का महाकुम्भ 144 साल बाद पड़ रहा है। इसलिए इसका खास महत्व है। यह 13 जनवरी 2025 से प्रारंभ होकर 26 फरवरी, 2025 तक चलेगा। इस दौरान तीन शाही स्नान और तीन मुख्य स्नान पर्व होंगे। पहला शाही स्नान 14 जनवरी, 2025 को मकर संक्रांति के दिन दूसरा शाही स्थान 29 जनवरी 2025 को मौनी अमावस्या के दिन पड़ रहा है। इसी दिन सबसे ज्यादा लगभग 2 करोड़ की भीड़ होने की संभावना है तीसरा शाही स्नान 3 फरवरी बसंत पंचमी के दिन है और चौथा शाही स्नान 12 फरवरी माघ पूर्णिमा को पड़ रहा है पांचवा 26 फरवरी का महाशिवरात्रि के दिन पड़ रहा है।

शाही स्नानों को इस बार राजसी स्नान कहा जाएगा। महाकुम्भ के दौरान लाखों की संख्या में लोग संगम की रेती में एक महीने का कल्पवास भी करेंगे जो पौष पूर्णिमा से लेकर माघ पूर्णिमा तक चलेगा। महाकुम्भ की विशालता का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि यह 4000 हेक्टेयर पर क्षेत्र में फैला होगा और इसमें 75 देश के श्रद्धालु भाग लेंगे इसके अंतर्गत लगभग 1 लाख शौचालय बनाए जाएंगे। मेले के लिए फिलहाल 2500 करोड़ का बजट तय किया गया है जिसमें से 1000 करोड रुपए पहले ही

आवंटित कर दिए गए हैं। सुरक्षा व्यवस्था को चाक–चौबंद बनाए रखने के लिए आसपास के जिलों के 69 थानों की पुलिस को यहां तैनात किया जा रहा है। इसमें प्रयागराज के अलावा कौशांबी, फतेहपुर, प्रतापगढ़, रायबरेली, सुल्तानपुर, जौनपुर, वाराणसी, भदोही, मिर्जापुर एवं सोनभद्र आदि की पुलिस लगाई जा रही है एवं मेला क्षेत्र में कुल 69 थाने 10 पुलिस चौकियां दो पुलिस लाइन और 10 विशाल अस्पताल बनाए जा रहे हैं। इसके अलावा अन्य राज्य सरकारों से भी पुलिस के 10000 जवान मांगे गए हैं। ताकि वहां की भाषा बोलने वाले तीर्थ यात्रियों को किसी प्रकार की भाषा–गत परेशानियों का सामना न करना पड़े। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने अपनी समीक्षा बैठक में साफ कहा है कि मेले में देश–विदेश से आने वाले श्रद्धालुओं के सामने किसी प्रकार की दिक्कत नहीं आनी चाहिए। उनके साथ अच्छा व्यवहार होना चाहिए और उन्हें सनातन तथा भारतीय संस्कृति का संदेश दिया जाना चाहिए।

यात्रियों के आवागमन में किसी प्रकार की कोई कठिनाई न हो इसके लिए राज्य परिवहन निगम की ओर से 6580 बसें चलाई जाएंगी और रेलवे ने 992 विशेष ट्रेन चलाने का फैसला किया है। मुख्य रेलवे स्टेशन प्रयागराज कैंट, प्रयाग, फाफामऊ, दारागंज, झूसी, नैनी आदि स्टेशनों को विशेष रूप से सुसज्जित किया जा रहा है।

विश्व का सबसे बड़ा मेला अगले साल उत्तर प्रदेश की सांस्कृतिक राजधानी प्रयागराज में लगने जा रहा है। महाकुम्भ के नाम से प्रसिद्ध इस मेले में लगभग 25 करोड़ के आसपास श्रद्धालुओं के आने की संभावना है। इसी के दृष्टिगत प्रयागराज में त्रिवेणी संगम पर तैयारी चल रही हैं। तैयारी की समीक्षा मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने विगत 6 अक्टूबर को संगम तट पर की और कई स्थलों का निरीक्षण भी किया।

महाकुम्भ के दौरान अखाड़े और साधु संतों एवं महामंडलेश्वरों तथा शंकराचार्य का विशेष महत्व होता है। चारों शंकराचार्य और 13 अखाड़े इसमें आते हैं और एक महीने तक प्रवास करके अपने–अपने तरीके से भक्तों को सनातन धर्म का उपदेश देते हैं। इस बार जिन 13 अखाड़े के भाग लेने की सहमति आ गई है उनके नाम है निरंजनी अखाड़ा, जूना अखाड़ा, महानिर्वाणी अखाड़ा, अटल अखाड़ा, आह्वान अखाड़ा, आनंद अखाड़ा, पंचाग्नि अखाड़ा, नागपंथी गोरखनाथ निर्मल क्षेत्र अखाड़ा, निर्मोही अखाड़ा तथा दिगंबर अखाड़ा। इन अखाड़ों में स्त्री पुरुष दोनों किस्म के साधु सन्यासी होते हैं। शासन प्रशासन इनका विशेष ध्यान रखते हैं और उनके लिए अलग–अलग रहने की व्यवस्था होती है।

मेला क्षेत्र में लाखों लोग हर समय रहते हैं इसलिए उनके ठहरने के लिए तंबू का विशाल नगर बसाया जा रहा है। क्योंकि इतने विशाल मेले में तमाम लोगों के भूलने–भटकने की भी आशंका रहती है इसलिए मेले में जगह–जगह भूले –भटके शिविर लगाए जाते हैं और भूले–भटके लोगों को उनके परिजनों से मिलवाने के लिए खास किस्म की व्यवस्था होती है। इसमें सरकारी और गैर सरकारी संस्थाएं अपना अपना योगदान देती है। जगह–जगह लोगों के खाने–पीने के लिए निःशुल्क भंडारे चलाए जाते हैं। कुछ लोग यह व्यवस्था अपनी ओर से करते हैं। ऐसे मेले में बिजली पानी प्रशासन की व्यवस्था करना बहुत महत्वपूर्ण पहलू होता है। इसलिए इस महाकुम्भ में एक लाख से अधिक सार्वजनिक प्रसाधन 3 लाख नल और 67 किलोमीटर बिजली लाइन और 571000 बिजली कनेक्शन लगाये जा रहे हैं। मेला क्षेत्र को तीन हिस्सों में बांटा गया है। फाफामऊ से संगम तक पहला हिस्सा दूसरा झूँसी और छतनाग तक तथा तीसरा अरैल एवं नैनी। पहले और दूसरे हिस्से को जोड़ने के लिए गंगा के ऊपर पीपे के 13 पुल बनाने का प्रस्ताव है जिस पर काम शुरू भी हो गया है। रेत पर सड़क बनाना महत्वपूर्ण एवं जोखिम भरा कार्य होता है इसलिए चेकर प्लेटो को बिछाकर सड़क के रूप में उसका उपयोग किया जाता है। मेला क्षेत्र में साफ सफाई व्यवस्था के लिए 10000 से अधिक सफाई कर्मी तैनात किए जा रहे हैं। जो विभिन्न जिलों से यहां बुलाए गए हैं। मुख्य क्षेत्र में ऐतिहासिक इलाहाबाद किले के किनारे यमुना तट पर हनुमान जी की विशाल लेटी हुई प्रतिमा है। कहा जाता है कि इस प्रतिमा को हटाने के लिए

औरंगजेब ने बहुत कोशिश की लेकिन वह कामयाब नहीं हो पाया आज भी हर श्रद्धालुओं की इच्छा होती है कि वह बड़े हनुमान जी का दर्शन अवश्य करें। इलाहाबाद का यह ऐतिहासिक किला सेना के अधीन है लेकिन इसके अंदर सम्राट अशोक की वह लाट है जो इतिहास को रेखांकित करने के लिए बहुत महत्वपूर्ण कड़ी मानी जाता है। इसी किले के अंदर वह वट वृक्ष भी है जो कभी नष्ट नहीं होता और कहा जाता है कि प्रलय काल में भी यह यथावत रहता है और ब्रह्मा जी इसी पर जाकर नए सिरे से सृष्टि के रचना करते हैं। यह ऐतिहासिक किला भारतीय सेना के अधीन है किंतु दर्शन एवं भ्रमण के लिए इसका कुछ हिस्सा मेला काल में खोल दिया जाता है। इसी किले के किनारे विशाल सांस्कृतिक पंडाल की स्थापना की जा रही है जहां पूरे 45 दिन नृत्य, नाटक और तरह–तरह के आयोजन होते रहेंगे।

क्यों और कहां–कहां लगता है कुम्भ मेलाः– कुम्भ का इतिहास बहुत प्राचीन है। त्रेता युग में जब देवताओं और दैत्य ने मिलकर समुद्र मंथन किया तो 14 रत्न उसमें से निकले पहला रत्न कालकूट विष था जिसे शंकर जी ने पी लिया और 14वां रत्न के रूप में अमृत निकला। यह एक कुम्भ यानी घड़े में था। अमृत को लेकर देवताओं और दैत्य में छीना झपटी होने लगी जिससे अमृत की कुछ बूंदे धरती पर गिर पड़ी। जहां अमृत की बूंदे गिरी वहां कुम्भ मेला लगने लगा। यह स्थान है प्रयागराज, हरिद्वार, नासिक और उज्जैन। इन चारों स्थान पर हर 12 साल में मेला लगता है उसे ही कुम्भ या महाकुम्भ कहा जाता है। उज्जैन और नासिक में लगने वाले मेले को सिंहस्थ कहते हैं। कुम्भ मेले के दौरान सारे देवता, किन्नर, गंधर्व मेले में आकर अमृत का पान करते हैं और जिन नदियों के किनारे यह मेले लगते हैं वहां का पानी अमृत बन जाता है। जैसे प्रयागराज का महाकुम्भ गंगा यमुना और सरस्वती अर्थात त्रिवेणी के संगम पर लगता है। हरिद्वार का भी गंगा के किनारे लगता है जबकि नासिक का कुम्भ गोदावरी नदी तथा उज्जैन का शिप्रा के तट पर लगता है। इन महाकुम्भों का अपने आप में बड़ा महत्व होता है किंतु सबसे अधिक महत्व प्रयागराज के ही कुम्भ का होता है तुलसीदास जी ने भी रामचरितमानस में लिखा है कि माघ मकर रवि गति जब हुई। तीर्थ पति ही आव सब कोई।। देव दनुज किन्नर नर श्रेणी। सादर मज्जहि सकल त्रिवेणी।। प्रयागराज को तीर्थराज भी कहा जाता है क्योंकि धरती पर ब्रह्मा जी ने पहला यज्ञ प्रयागराज में ही किया था और हर साल यहां पर महाराजा हर्षवर्धन आकर अपना सर्वस्व दान कर देते थे। इसीलिए कुम्भ के दौरान दान दक्षिणा का भी बड़ा महत्व होता है। कल्पवास में आने वाले लाखों नर नारी बालू की रेती में माघ की कड़कड़ाती ठंड

इस बार का महाकुम्भ 144 साल बाद पड़ रहा है। इसलिए इसका खास महत्व है। यह 13 जनवरी 2025 से प्रारंभ होकर 26 फरवरी, 2025 तक चलेगा। इस दौरान तीन शाही स्नान और तीन मुख्य स्नान पर्व होंगे। पहला शाही स्नान 14 जनवरी, 2025 को मकर संक्रांति के दिन दूसरा शाही स्थान 29 जनवरी 2025 को मौनी अमावस्या के दिन पड़ रहा है। इसी दिन सबसे ज्यादा लगभग 2 करोड़ की भीड़ होने की संभावना है।

में जिस श्रद्धा भाव से कल्पवास करते हैं वह देखते ही बनता है। प्रयाग में तीन नदियों का संगम माना जाता है जिसमें गंगा, जमुना और सरस्वती हैं। गंगा, जमुना दृश्य रूप में है सरस्वती की धारा अदृश्य है। गंगा से मिलने वाली नदी यमुना है जो सूर्यपुत्री है और यमराज की बहन है इसीलिए कहते हैं यमुना में स्नान करने वाले को यमराज कभी सताते नहीं। गंगा सारे संसार में सबसे पवित्र नदी मानी जाती है। इसमें एक बार जो व्यक्ति स्नान कर लेता है उसके सारे पाप आपने–आप धुल जाते हैं। इसीलिए गंगा की धारा को निर्मल रखने के लिए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने खास निर्देश दिए हैं। उनका कहना है कि हरिद्वार से लेकर प्रयागराज और आगे वाराणसी तक गंगा की धारा को पूरे कुम्भ के दौरान निर्मल रखा जाएगा।

मेले को सुचारू रूप से संचालित करने के लिए राज्य सरकार ने विजय किरन आनंद को मुख्य मेला अधिकारी और आलोक शर्मा को डीआईजी के रूप में तैनात किया है। आलोक शर्मा पहले भी मेला में एसपी के रूप में काम कर चुके हैं। इसलिए उन्हें मेले में कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए अच्छा खासा अनुभव है। विजय किरन आनंद भी एक योग्य ईमानदार और सक्षम आईएएस अधिकारी माने जाते हैं। ऐसे में उम्मीद की जानी चाहिए करोड़ों–करोड़ों तीर्थ यात्रियों को मेले में आने पर काफी सुविधा मिलेगी। कोई कमी न होने पावे इसके लिए खाद्य एवं रसद विभाग की ओर से अस्थाई राशन कार्ड भी बनाए जाते हैं और जाड़े के महीने में लोगों को सर्दी से बचने के लिए जगह–जगह अलाव जलाए जाते हैं। जिसके लिए वन विभाग से हजारों टन लकड़ी और कोयला उपलब्ध कराया जाता है। खदी एवं ग्राम उद्योग विभाग की ओर से हजारों की संख्या में लोगों को कंबल भी बांटे जाते हैं और गद्दा, रजाई चारपाई सबकी व्यवस्था मुफ्त होती है। देश विदेश की मीडिया को ठहरने और उन्हें आवश्यक सुविधाएं मुहैया कराने के लिए सूचना विभाग की ओर से पत्रकार पुरम स्थापना की जा रही है प्रयागराज नगर में कुछ अन्य दर्शनीय स्थल जैसे इलाहाबाद विश्वविद्यालय, शहीद चंद्रशेखर आज़ाद पार्क, सिविल लाइन का गिरजाघर, आनंद भवन, म्योर सेन्ट्रल कॉलेज, हाई कोर्ट, सुमित्रानंदन पंत उद्यान आदि भी देखे जा सकते हैं। यहां तक पहुंचाने के लिए सरकार ने 1000 से अधिक सिटी बसों की व्यवस्था कर रखी है। इलाहाबाद विश्वविद्यालय भारत के चार प्राचीनतम विश्वविद्यालयों में से एक है। इसकी स्थापना 1887 में की गई थी और इसे पूरब का ऑक्सफोर्ड भी कहा जाता है।

कुल मिलाकर महाकुम्भ दुनिया का एक अनूठा एवं भव्य आयोजन है। संजोग से मुझे 1977, 1989, 2001 और 2013 के महाकुम्भ में जाने का अवसर प्राप्त हुआ। ऐसा अद्भुत नजारा मैंने जिंदगी में कभी देखने की कल्पना भी नहीं की थी और शब्दों में इसका वर्णन नहीं किया जा सकता। डिस्कवरी चैनल पर भी पिछले महाकुम्भ को कई बार दिखाया जा चुका है।इसकी भव्यता को वही लोग अनुभव कर सकते हैं जो वहां पर जाकर अपनी आंखों से देखें। इसलिए लोगों से अपेक्षा है कि वे इस महाकुम्भ का आनंद लेने के लिए एक बार जरूर प्रयागराज की पवित्र धरती की यात्रा करेंगे और पुण्य–सलिला गंगा, जमुना, सरस्वती के त्रिवेणी संगम में डुबकी लगाकर अपने जन्म–जन्मांतर को कृतार्थ करेंगे। ◆

मो. : 9450420707

टूरिस्ट हब बना उत्तर प्रदेश

–प्रद्युम्न तिवारी

उत्तर प्रदेश पर्यटन के क्षेत्र में फिर नया कीर्तिमान रचने के लिए तैयार है। यहां पर्यटकों की संख्या में लगातार इजाफा हो रहा है। प्रदेश में पर्यटन के क्षेत्र में हाल के वर्षों में काफी तेजी से वृद्धि हुई है। न सिर्फ देशी बल्कि विदेशी पर्यटक भी काफी संख्या में उत्तर प्रदेश भ्रमण के लिए आ रहे हैं। इसके साथ ही उत्तर प्रदेश पर्यटन के मामले में अग्रणी राज्यों में शामिल हो गया है। वहीं एक पर्यटक के आने से प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष रूप से औसतन छह लोगों को रोजगार भी मिल रहा है। पहले सूबे में धार्मिक और आध्यात्मिक पर्यटन ही अधिक होता था लेकिन अब सरकार ने ईको टूरिज्म को भी बढ़ावा देना शुरु कर दिया है। बीते छह माह में लगभग 33 करोड़ पर्यटकों ने यहां का रुख किया। अयोध्या ने काशी को भी पीछे छोड़ दिया। बीते वर्ष 48 करोड़ से अधिक पर्यटकों ने उत्तर प्रदेश का भ्रमण किया। यह संख्या 10 वर्ष पहले आए पर्यटकों की संख्या से लगभग 25 करोड़ अधिक है। आंकडों के मुताबिक उत्तर प्रदेश में वर्ष 2013 में 23 करोड़ 10 लाख पर्यटक आए थे। वहीं वर्ष 2023 में 48 करोड़ 01 लाख से अधिक लोगों ने यहां भ्रमण किया। यानी 10 वर्षों में 24 करोड़ 91 लाख से ज्यादा की वृद्धि हुई। वर्ष 2013 में प्रयागराज में कुम्भ का आयोजन भी हुआ था। इसमें 7 करोड़ 86 लाख से ज्यादा पर्यटक आए थे। 2025 में होने वाले महाकुम्भ में यह संख्या दोगुनी से भी कहीं अधिक होने की उम्मीद है।

प्रदेश में बीते दस वर्षों में पर्यटकों की संख्या में यह वृद्धि अचानक नहीं हुई बल्कि प्रतिवर्ष वृद्धि हुई है। 2013 में कुम्भ होने के बावजूद जितने पर्यटक आए थे वर्ष 2017 में

उससे 65 लाख 09 हजार ज्यादा पर्यटक पहुंच गए। यानी मात्र चार वर्षों में कुम्भ के रिकार्ड को पीछे छोड़ दिया। इसके ठीक एक वर्ष बाद यानी 2018 में 5 करोड़ 13 लाख से अधिक पर्यटकों ने प्रदेश का भ्रमण किया। इसी तरह वर्ष 2019 में प्रयागराज में कुम्भ का आयोजन हुआ। इस दौरान पूरे प्रदेश में 54 करोड़ से ज्यादा पर्यटकों ने यहां का भ्रमण किया था। कुम्भ में 24 करोड़ से ज्यादा श्रद्धालु पहुंचे थे, यह संख्या वर्ष 2013 कुम्भ में प्रयागराज में आए श्रद्धालुओं की संख्या की तीन गुना है। ऐसे में इस साल पर्यटन विभाग महाकुम्भ को लेकर और भव्य व दिव्य बनाने की दिशा में काफी काम कर रहा है। ताकि ज्यादा से ज्यादा देशी–विदेशी पर्यटकों को आकर्षित कर सके।

दरअसल, कोरोना के दौरान सभी सेक्टर की हालत बिगड़ी तो पर्यटन सेक्टर भी इससे अछूता नहीं रहा लेकिन 2022 में आए पर्यटकों ने काफी हद तक रौनक लौटा दी है। 2022 में कुल 31 करोड़ 85 लाख से अधिक लोग प्रदेश में भ्रमण के लिए आए। वहीं 2023 में यह 48 करोड़ पहुंच गया। इस वर्ष यूपी सबसे ज्यादा घरेलू पर्यटकों वाला राज्य भी घोषित किया गया है। अयोध्या में वर्ष 2013 में 1 करोड़ 43 लाख से पर्यटक आए थे, जबकि 2023 में 5 करोड़ 75 लाख से पर्यटक आए। इस हिसाब से 10 वर्षों में 4 करोड़ 31 लाख 81 हजार पर्यटक बढ़े। यह आंकड़े तब के हैं जब श्रीराम जन्मभूमि मंदिर में रामलला विराजमान नहीं हुए थे। अब प्रतिदिन लगभग एक से डेढ़ लाख लोग यहां दर्शन–पूजन के लिए पहुंच रहे हैं। इससे अयोध्या में स्थानीय लोगों के लिए रोजगार के काफी अवसर भी बढ़े हैं। वहीं, बाबा विश्वनाथ के त्रिशूल पर विराजमान काशी में वर्ष 2013 में 52 लाख 51 हजार पर्यटक आए थे। जबकि वर्ष 2023 में 10 करोड़ 18 लाख से अधिक लोग आए हैं। यानी 9 करोड़ 66 लाख 16 हजार पर्यटक बढ़े हैं। 10 वर्षों में लगभग 20 प्रतिशत है। इस अप्रत्याशित वृद्धि का मूल कारण काशी विश्वनाथ कॉरिडोर है। देश ही नहीं प्रदेश के कोने–कोने से काफी संख्या में लोग यहां दर्शन–पूजन के लिए आते हैं। पर्यटन विभाग यहां काफी मूलभूत सुविधाओं का विकास कर रहा है।

उत्तर प्रदेश पर्यटन के क्षेत्र में फिर नया कीर्तिमान रचने के लिए तैयार है। यहां पर्यटकों की संख्या में लगातार इजाफा हो रहा है। प्रदेश में पर्यटन के क्षेत्र में हाल के वर्षों में काफी तेजी से वृद्धि हुई है। न सिर्फ देशी बल्कि विदेशी पर्यटक भी काफी संख्या में उत्तर प्रदेश भ्रमण के लिए आ रहे हैं। इसके साथ ही उत्तर प्रदेश पर्यटन के मामले में अग्रणी राज्यों में शामिल हो गया है। वहीं एक पर्यटक के आने से प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष रूप से औसतन छह लोगों को रोजगार भी मिल रहा है। पहले सूबे में धार्मिक और आध्यात्मिक पर्यटन ही अधिक होता था लेकिन अब सरकार ने ईको टूरिज्म को भी बढ़ावा देना शुरु कर दिया है। बीते छह माह में लगभग 33 करोड़ पर्यटकों ने यहां का रुख किया।

इसी तरह भगवान श्रीकृष्ण की जन्मस्थली मथुरा में वर्ष 2013 में 3 करोड़ 20 लाख पर्यटक आए थे। वर्ष 2023 में 7 करोड़ 79 लाख पर्यटक आए थे। इस तरह 10 वर्षों में 4 करोड़ 58 लाख पर्यटकों की संख्या बढ़ी है। दूसरी तरफ पर्यटन विभाग पर्यटकों को आकर्षित करने में भी कोई कसर नहीं छोड़ रहा है। वाराणसी, अयोध्या, गोरखपुर में क्रूज का संचालन हो रहा है। मथुरा समेत कई अन्य स्थलों की प्रक्रिया चल रही है। वहीं अयोध्या, दुधवा समेत अन्य स्थलों पर हेलीकॉप्टर सेवा शुरू करने की तैयारी चल रही है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का कहना है कि यूपी देश का हृदय स्थल है और यहां पर असीम संभावनाएं भी हैं। इको पर्यटन बोर्ड इस दिशा में काफी काम कर रहा है। प्रदेश में आध्यात्मिक पर्यटन के काफी केंद्र हैं। इसी तरह की संभावनाएं ईको टूरिज्म के क्षेत्र में भी हैं। सोनभद्र का फासिल्स पार्क इसी में से एक है। यहां कई ऐसे स्थल, वन, सरोवर ताल हैं। उत्तर प्रदेश पर्यटन के क्षेत्र में तेजी से विकास करने वाला राज्य है। अभी हम घरेलू पर्यटन के मामले में पहले स्थान पर हैं। विदेशी पर्यटकों के मामले में भी यह उपलब्धि हासिल करने के लिए निरंतर प्रयास किया

जा रहा है। उत्तर प्रदेश में पर्यटन के क्षेत्र में असीम संभावनाएं हैं। सभी को इसका लाभ भी मिल रहा है। उत्तर प्रदेश में नैमिषारण्य, चित्रकूट, शुकतीर्थ, विंध्यवासिनी धाम, मां पाटेश्वरी धाम, मां शाकंभरी धाम सहारनपुर, बौद्ध तीर्थ स्थल कपिलवस्तु, सारनाथ, कुशीनगर, श्रावस्ती, संकिसा, लखनऊ के निकट जैन और सूफी परंपरा से जुड़े स्थानों में धार्मिक पर्यटन की पहले से ही काफी संभावनाएं हैं। वहीं राज्य के तराई क्षेत्र (बहराइच, लखीमपुर खीरी, श्रावस्ती, बलरामपुर, पीलीभीत) में प्राचीन काल के वन हैं, जबकि दूसरी ओर नेपाल में वन लुप्त हो चुके हैं। चूका, दुधवा, पीलीभीत टाइगर रिजर्व के बाद अब चित्रकूट और बिजनौर के अमनगढ़ में टाइगर रिजर्व को विकसित किया जा रहा है। आने वाले दिनों में यह क्षेत्र भी आकर्षण का केन्द्र होगा। राज्य सरकार ने उत्तर प्रदेश इको टूरिज्म डेवलपमेंट बोर्ड का गठन इस उद्देश्य से किया है।

वहीं अब उत्तर प्रदेश पर्यटन विभाग निगम में भारतीय अंतर्देशीय जलमार्ग प्राधिकरण को पत्र लिखकर गोवा और केरल की तर्ज पर रोमांचक जल भ्रमण कराने की तैयारी कर रहा है। पर्यटन विभाग ने अयोध्या, काशी और मथुरा में ओपेन कैटामारन बोट संचालन का निर्णय लिया है। इस योजना को पूरा करने के लिए भारतीय अंतर्देशीय जलमार्ग प्राधिकरण से 06 कैटामारन बोट उपलब्ध कराने के लिए समझौता किया गया है। प्रदेश के पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री जयवीर सिंह के मुताबिक समझौते के तहत अयोध्या, काशी, मथुरा में 02–02 बोट का संचालन किया जाएगा। अब तक अयोध्या और काशी में एक–एक कैटामारन बोट की आपूर्ति की जा चुकी है। इस बोट में 50 लोगों के बैठने की व्यवस्था है। पर्यटन विभाग अपने संसाधनों एवं सामर्थ्य का प्रयोग करके पर्यटन को नई ऊचांईयों तक ले जाना चाहता है। पर्यटन मंत्री के अनुसार यूपी में पर्यटकों से जुड़े विविध आकर्षक टूरिस्ट स्थल हैं। जैसे रूरल, एग्री तथा वाटर स्पोर्टस पर तेजी से कार्य किया जा रहा है। वाटर स्पोर्टस की असीमित संभावनायें हैं। इसे व्यवहारिक रूप देकर पर्यटकों को प्रदेश आने के लिए अनुकूल परिस्थितियां बनाई जा रही है। जलमार्ग प्राधिकरण को यह भी सुझाव दिया गया है कि अब जो भी कैटामारन बोट की आपूर्ति की जाए, वह ओपन हो, इसमें पैट्री, शौचालय सहित अन्य सुविधाएं उपलब्ध हों, ताकि पर्यटक निश्चित होकर आसपास के रमणीक दृश्यों का अवलोकन कर सकें।

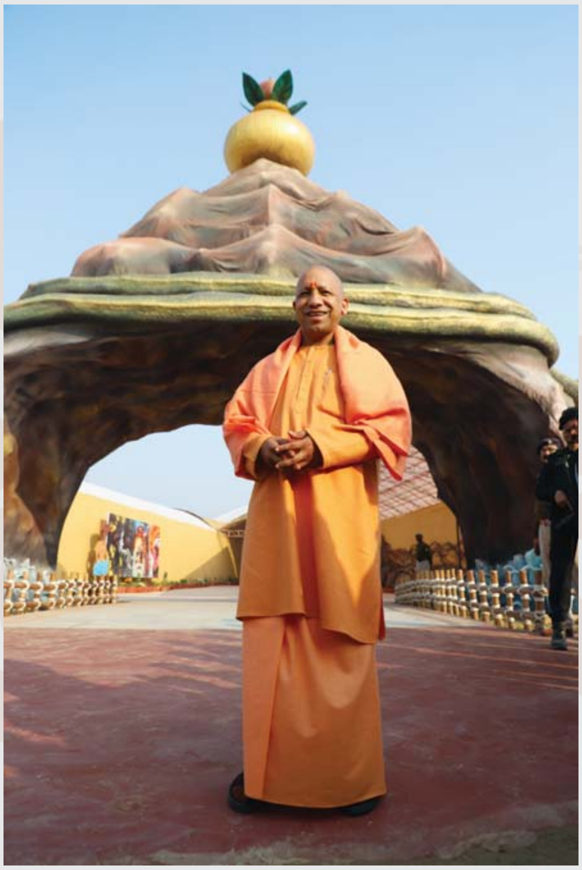

राज्य में पर्यटन के विविध आयाम पर तेजी से काम हो रहा है। देश–दुनिया से आने वाले पर्यटकों के सामने भ्रमण के असीमित विकल्प है। ओपन कैटामारन बोट आने के बाद पर्यटक खुले में जल भ्रमण का आनंद ले सकेंगे। भारतीय अंतर्देशीय जलमार्ग प्राधिकरण (आईडब्ल्यूएआई) ने उत्तर प्रदेश राज्य पर्यटन निगम को पिछले महीने अयोध्या और काशी में कैटामारन, जबकि प्रयागराज में इलेक्ट्रिक बोट हैंडओवर किया था। प्रयागराज में दो मिनी क्रूज बोट में 30–30 लोगों व 06 मोटर बोट में 4 पर्यटकों के बैठने की व्यवस्था है। इनके संचालन की प्रक्रिया पर्यटन निगम के द्वारा शुरू कर दी गई गई है। उत्तर प्रदेश में पर्यटन को बढ़ावा देने और पर्यटकों को बेहतर सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए यूपी पर्यटन विभाग नई तकनीकों का उपयोग कर रहा है। राज्य में आने वाले पर्यटकों को अब और भी अनूठा अनुभव मिलेगा, क्योंकि

पर्यटन विभाग जल्द ही 100 प्रमुख स्थलों पर क्यूआर कोड आधारित ऑडियो टूर सुविधा शुरू करने जा रहा है। इस सुविधा के जरिए पर्यटक स्मार्टफोन से क्यूआर कोड स्कैन कर इन स्थलों की ध्वनि आधारित जानकारी प्राप्त कर सकेंगे, जिससे उनके भ्रमण का अनुभव और भी सरल और ज्ञानवर्धक होगा। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के विजन के अनुसार, लखनऊ और प्रयागराज के प्रमुख स्थलों का 3डी मेटावर्स प्लेटफार्म पर डेटा संकलित किया जा रहा है। इस परियोजना के तहत इन शहरों के लगभग 1,500 महत्वपूर्ण स्थलों का 360–डिग्री पैनोरमिक दृश्य एकत्र किया जाएगा, जिसे वेब और मोबाइल ऐप के माध्यम से वर्चुअल टूर के रूप में पेश किया जाएगा। इस प्रोजेक्ट के लिए लखनऊ और प्रयागराज में प्रमुख ऐतिहासिक और धार्मिक स्थलों का डिटेल सर्वे किया जाएगा। यह ऐप पर्यटकों को वर्चुअल रूप से इन स्थलों की सैर कराने का अनुभव प्रदान करेगा।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का कहना है कि यूपी देश का हृदय स्थल है और यहां पर असीम संभावनाएं भी हैं। इको पर्यटन बोर्ड इस दिशा में काफी काम कर रहा है। प्रदेश में आध्यात्मिक पर्यटन के काफी केंद्र हैं। इसी तरह की संभावनाएं ईको टूरिज्म के क्षेत्र में भी हैं। सोनभद्र का फासिल्स पार्क इसी में से एक है। यहां कई ऐसे स्थल, वन, सरोवर ताल हैं। उत्तर प्रदेश पर्यटन के क्षेत्र में तेजी से विकास करने वाला राज्य है।

यूपी पर्यटन विभाग क्यूआर कोड इनेबल्ड ऑडियो टूर पोर्टल की शुरुआत करने जा रहा है, जिससे पर्यटक अपने स्मार्टफोन से क्यूआर कोड स्कैन कर प्रमुख पर्यटन स्थलों की ऑडियो गाइड का लाभ उठा सकेंगे। इस सुविधा के तहत प्रयागराज, अयोध्या, वाराणसी, श्रावस्ती, लखनऊ, आगरा, मथुरा और अन्य शहरों के प्रमुख धार्मिक, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक स्थलों को शामिल किया जाएगा। इस ऑडियो टूर सुविधा से पर्यटकों को हर स्थल के इतिहास, संस्कृति और महत्त्वपूर्ण जानकारियों के बारे में डिटेल जानकारी मिलेगी, जिससे उनकी यात्रा और भी खास और आकर्षक हो जाएगी। ◆

मो. : 9935097419

योगी के सपनों का कुम्भ

—चित्रांशी

13 जनवरी, 2025 से प्रारंभ हो रहे महाकुम्भ को मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ अद्भुत बनाने में जी जान से जुट गए हैं। हर बारह वर्ष पर लगने वाले इस कुम्भ में देश भर के संतों का जुटाना होता है। नागा साधुओं का संगम स्नान मुख्य आकर्षण होता है। प्रयागराज का संपूर्ण संगम तट आस्था मय हो जाता है। कुम्भ का संपूर्ण दृश्य कुछ यूं हो उठता है मानो साहित्य व धर्म के इस नगर को भगवान ने आस्था की चादर ओढ़ा दी हो। कहना न होगा कि मुख्यमंत्री इस कुम्भ से पूरे विश्व को यह संदेश देना चाहेंगे कि सभी का कल्याण हो।

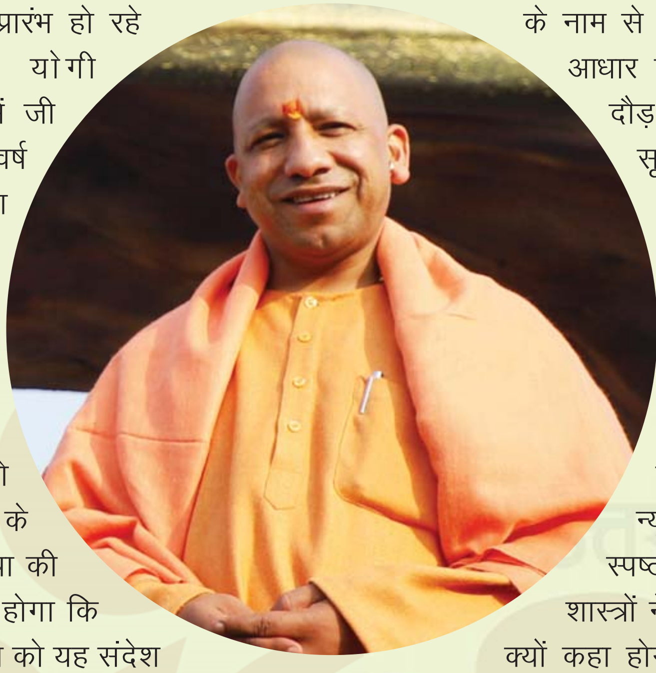

कुम्भ के इतिहास को झांके तो पता चलेगा कि इस धर्म यात्रा के अब तक लाखों पड़ाव बीत चुके होंगे। दर असल कुम्भ की भी एक यात्रा है जो भारत के नासिक, हरिद्वार और उज्जैन में क्रमवार हर पाँच वर्ष पर आयोजित होता है। इसे हम अर्ध कुम्भ कहते हैं। प्रयागराज पृथ्वी का ऐसा पवित्र स्थल है जहां गंगा, यमुना और सरस्वती का पावन संगम है। 12 वर्ष में महाकुम्भ इस बार प्रयागराज में है।

कुम्भ के धार्मिक और वैज्ञानिक वक्ष को समझने के लिए इतना जानना होगा कि जब हम कुम्भ के आकार वाले ब्रह्मांड की चर्चा करते हैं तो इसके सूक्ष्म स्वरूप से चिंतन आरंभ होता है। सृष्टि में जो भी साकार है उसका निर्माण अणुओं से हुआ है। सनातन संस्कृति में प्रत्येक सूक्ष्म के तीन गुण बताए गए हैं। इसी आधार पर प्रकृति और सृष्टि को त्रिगुणी कहा गया। रज, तम, सत! पश्चिम के आधुनिक विज्ञान ने भी सृष्टि के सूक्ष्म को तोड़ कर तीन ही गुण बताए हैं जिन्हें विज्ञान की भाषा में इलेक्ट्रॉन, प्रोटॉन और न्यूट्रॉन के नाम से जाना जाता है। इन्हीं तीन के आधार पर आज की आधुनिक दुनिया दौड़ रही है। सनातन संस्कृति में सृष्टि के आधार कारक स्वरूप तीन देव सुनिश्चित किए गए हैं जिन्हें क्रम से ब्रह्मा, विष्णु और महेश की संज्ञा दी गई है। जन्म के कारक ब्रह्मा जी हैं। जीवन के पोषक विष्णु जी हैं। मृत्यु के देव महेश हैं। इसी तरह इलेक्ट्रॉन, प्रोटॉन और न्यूट्रॉन के गुणों की विवेचना से स्पष्ट हो जाएगा कि हमारे सनातन शास्त्रों ने प्रकृति और सृष्टि को त्रिगुणी क्यों कहा होगा। कुम्भ में हमारे पूज्य ब्रह्मा, विष्णु और महेश की निरंतर उपस्थिति के कारण ही कुम्भ को ब्रह्माण्ड का सृष्टि पर्व कहा गया है।

भारत से बाहर की दुनिया को यह आयोजन बहुत ही रहस्यमय और अद्भुत लगता है। यह धर्म, पंथ, मजहब, अध्यात्म और दुनिया के सांस्कृतिक एवं भौतिकवादी चिंतन का भी पर्व है। यह एक मात्र समागम है जिसमें सनातन को स्वीकार कर अपनी यात्रा कर रहे तीन अनियों, 13 अखाड़ों और 147 संप्रदायों को प्रयागराज में संगम तट पर एक साथ देखा और जाना जा सकता है।

कुम्भ के धार्मिक और आध्यात्मिक महत्व के इतर इस बार के कुंभ का महत्व इसलिए खास है क्योंकि दुनिया के करीब 65 देशों के नागरिक प्रयागराज में पंहुच कर इसके त्रिकोणीय महत्व को समझने बूझने की कोशिश करेंगे। योगी सरकार यहां आने वाले विदेशी श्रद्धालुओं का खास ख्याल रखने का इंतजाम कर रही है।

यहां जुटने वाले साधु संतों के संपूर्ण सुख सुविधा का ख्याल रखा ही जाएगा, योगी सरकार तीर्थ यात्रियों और संगम में डुबकी लगाने आने वाले लाखों लोगों के सुगम

आगमन को लेकर पूर्णतः सचेत हैं। इसके लिए सभी प्रशासनिक विभागों की तरफ से युद्ध स्तर पर तैयारियां चल रही हैं। उत्तर प्रदेश राज्य सड़क परिवहन विभाग भी महाकुम्भ पहुंचने वाले श्रद्धालुओं और पर्यटकों के लिए कई अभियान चला रहा है ताकि आगंतुकों को किसी तरह की दिक्कत का सामना न करना पड़े। रोडवेज कुलियों को महाकुम्भ के लिए तैयार करना इसी कड़ी का हिस्सा है।

सरकार और प्रशासन को अनुमान है कि इस बार के कुम्भ में देश भर से कम से कम 41 करोड़ से अधिक श्रद्धालु और पर्यटक कुम्भ नगरी पहुंच सकते हैं। इन आगंतुकों में सबसे अधिक संख्या बस यात्रियों की होगी जो बस से ही प्रयागराज पहुंचेंगे। रोडवेज का यह प्रयास होगा कि कुम्भ नगरी पंहुचने वाले एक भी श्रद्धालुओं को कोई असुविधा न हो। आगंतुक यहां से अच्छा अनुभव लेकर जाएं इसके लिए राज्य सड़क परिवहन विभाग की तरफ से रोडवेज के कुलियों को भी तैयार किया जा रहा है। उत्तर प्रदेश परिवहन निगम का प्रयास रहेगा कि संगम नगरी पंहुचने वाले तीर्थ यात्रियों को खास तौर पर प्रशिक्षित कुली उनकी हर संभव मदद करें।

रोडवेज के प्रयागराज परिक्षेत्र के क्षेत्रीय प्रबंधक का कहना है कि रोडवेज बस स्टेशन पहुंचने पर यात्रियों का सबसे पहला संपर्क रोडवेज कुलियों से होता है। ऐसे में रोडवेज कुलियों को विशेष प्रशिक्षण दिया जाएगा। कुलियों को यात्रियों के साथ अच्छा व्यवहार करने के साथ महाकुम्भ जाने के साधनों और मार्गों की बुनियादी जानकारी देने का अभियान इसमें शामिल होगा।

अपनी यात्रा के समापन के बाद अपना लगेज लेकर जब आप प्रयागराज रोडवेज बस स्टैंड पहुंचे तब बस के पास रेलवे प्लेटफॉम की तरह रोडवेज कुली आपकी सेवा में लिए तत्पर मिले ऐसी यूपी रोडवेज महकमें की कोशिश है। क्षेत्रीय प्रबंधक के मुताबिक प्रारम्भ में इन्हें आठ–आठ घंटे की दो शिफ्ट में काम के लिए उतारा जाएगा। इन्हें इनकी यूनिफॉर्म और बैज भी प्रदान किये गए हैं। रेलवे के कुलियों की लाल यूनिफॉर्म की जगह इन्हें नीले रंग की पैंट–शर्ट यूनिफार्म के तौर पर दी गई है। इन कुलियों की बांह पर

पीतल का एक बिल्ला लगा है जिस पर उनकी पहचान का नंबर लिखा गया है। रोडवेज ने इनकी पूरी पहचान और बर्ताव को परखने के बाद इन्हें सेवा में उतारा है। आधार कार्ड और आपराधिक रिकॉर्ड की जानकारी करने के बाद ही कुलियों को बिल्ले दिए गए हैं। पहले बैच में सिविल लाइंस रोडवेज बस स्टैंड में 16 रोडवेज कुलियों को इस सेवा के लिए तैयार किया जा रहा है।

प्रयागराज के सिविल लाइन्स बस स्टेशन से 118 बसों का आवागमन होता है। इस बस स्टेशन में प्रतिदिन डेढ़ लाख से अधिक रोडवेज यात्रियों का आना जाना होता है। इन सभी यात्रियों को रोडवेज के कुली अपनी सेवा देंगे। सीनियर सिटीजन और दिव्यांग यात्रियों की मदद में ये सबसे अधिक मददगार साबित होंगे। रोडवेज महकमें का मानना है कि महाकुम्भ में आने वाले श्रद्धालु हमारे लिए अतिथि होंगे, खास तौर पर दिव्यांग और सीनियर सिटीजन।

इन्हें बस से उतरते ही पूरी विनम्रता के साथ सेवा देने के साथ हम लोग उन्हें कुम्भ के मार्गों और वहां पहुंचने के लिए साधन की जानकारी भी अपनी तरफ से देंगे ताकि उन्हें वहां पहुंचने में कोई असुविधा न हो। रोडवेज की तरफ से कुलियों को सेवा देने के एवज में जो भी पैसा निर्धारित होगा उसकी रेट लिस्ट बस स्टैंड में लगाई जाएगी।

इस बार के कुम्भ का महत्व थोड़ा अलग इसलिए भी कि यहां धार्मिक और अध्यात्म के बीच कुछ कुछ पर्यटकीय पुट भी देने की कोशिश की गई है। महापुरुषों की एतिहासिक चित्रों की विशाल आजाद गैलरी पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करेगी। यहाँ चंद्रशेखर आजाद की पिस्टल और बमतुल बुखारा भी लोगों के आकर्षण का केंद्र होगी।

महाकुम्भ 2025 सनातन धर्म का सबसे बड़ा आयोजन बनने तो जा ही रहा है, मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की मंशा के अनुरूप उत्तर प्रदेश सरकार के सहयोग से केंद्रीय संस्कृति एवं पर्यटन मंत्रालय देश को आजादी दिलाने वाले महान क्रांतिकारियों की जीवंत गाथा महाकुंभ के दौरान प्रस्तुत करने जा रहा है। एक ऐसी प्रदर्शनी का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें भारत को आजादी दिलाने वाले महान नायक चंद्रशेखर आजाद की पिस्टल की प्रतिकृति का भी प्रदर्शन किया जाएगा। इसके अलावा संग्रहालय में मौजूद तमाम प्राचीन हथियारों की प्रतिकृतियां भी देश विदेश से आने वाले श्रद्धालुओं के आकर्षण का केंद्र बनने जा रही हैं।

इलाहाबाद संग्रहालय के डिप्टी क्यूरेटर डॉ. राजेश मिश्रा के अनुसार महाकुम्भ के दौरान केंद्रीय संस्कृति एवं पर्यटन मंत्रालय देश विदेश से प्रयागराज आने वाले करोड़ों श्रद्धालुओं को भारत की आजादी के महान क्रांतिवीरों की गाथा से रूबरू कराएगा। इसी उद्देश्य से देश के महान क्रांतिवीरों के जीवन से जुड़ी जीवंत प्रदर्शनी के आयोजन की तैयारी है। केंद्रीय संस्कृति एवं पर्यटन मंत्रालय ने महाकुम्भ में प्रदर्शनी के लिए उत्तर प्रदेश की योगी आदित्यनाथ सरकार से जगह मांगी थी। जिसके तहत प्रदेश सरकार संग्रहालय को जगह उपलब्ध करा दी है। इसमें देश के महान क्रांतिवीरों के जीवन से लोग परिचित होंगे। साथ ही उन्हें आजादी के लिए संघर्ष करने वाले वीरों की कई अनकही कहानियां भी जानने का मौका मिलेगा।

चंद्रशेखर आजाद की पिस्टल बमतुल बुखारा से गोली चलने के बाद इसमें धुआं नहीं निकलता था। इसलिए, अंग्रेजों को पता ही नहीं चल पाता था कि गोलियां किधर से आ रही हैं। यह कोल्ट कंपनी की .32 बोर की हैमरलेस सेमी ऑटोमेटिक पिस्टल थी। इसमें एक बार में आठ गोलियों की मैगजीन लगती थी। आजाद की पिस्टल देखने के लिए बड़ी संख्या में इतिहास प्रेमी और पर्यटक आते हैं। आजाद की यह पिस्टल अभी प्रयागराज के राष्ट्रीय संग्रहालय में है।

प्रयागराज में महाकुम्भ 2025 की तैयारियों के तहत सड़क चौड़ीकरण और सुदृढ़ीकरण के कार्य तेजी से प्रगति पर हैं। प्रयागराज विकास प्राधिकरण (पीडीए) ने इस विशाल आयोजन को सफल बनाने के लिए तैयारियों में कोई कसर नहीं छोड़ी है। महाकुम्भ में श्रद्धालुओं और पर्यटकों के सुगम आवागमन के लिए शहर की प्रमुख सड़कों का चौड़ीकरण और मजबूती का कार्य 30 नवंबर तक पूरा करने का लक्ष्य रखा गया है।

महाकुम्भ 2025 के स्वागत के लिए प्रयागराज पूरी तरह से तैयार है। कुम्भ को सुगम और स्मरणीय बनाने के लिए सभी आवश्यक कदम उठाए गए हैं। महाकुम्भ के मद्देनजर पीडीए कुल 50 परियोजनाओं पर कार्य हुआ है। इनमें सड़कों का चौड़ीकरण, ड्रेनेज सिस्टम, लाइटिंग, और अन्य बुनियादी सुविधाओं का सुदृढ़ीकरण शामिल है। इससे शहर में यातायात सुगम होगा और आने वाले श्रद्धालुओं को किसी प्रकार की असुविधा का सामना नहीं करना पड़ेगा।

महाकुम्भ के प्रमुख आकर्षणों में शामिल हनुमान मंदिर कॉरिडोर न केवल धार्मिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है, बल्कि पर्यटकों के लिए भी आकर्षण का केंद्र होगा। इस बार के कुम्भ का आयोजन और तैयारियां शत प्रतिशत मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की मंशानुरूप उनके कुशल निर्देशों में हो रही हैं। ताकि यहां आने वाले लाखों करोड़ों लोग पवित्र गंगा जल और फील गुड के साथ वापस जाएं। ◆

मो. : 79055 25699

सामाजिक समरसता का संदेश देती है वाल्मीकि रामायण

–डॉ. सौरभ मालवीय

विगत एक दशक से देशभर में भारतीय संस्कृति के पुनर्जागरण का स्वर्णिम युग चल रहा है। उत्तर प्रदेश सहित देशभर में सांस्कृतिक, धार्मिक एवं सामाजिक कार्य तीव्र गति से चल रहे हैं। भारतीय संस्कृति का विश्व भर में प्रचार–प्रसार हो रहा है। यह सब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के अथक प्रयासों से ही संभव हो रहा है। उत्तर प्रदेश की योगी सरकार राज्य में धार्मिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों को निरंतर प्रोत्साहित कर रही है। इसी कड़ी में महर्षि वाल्मीकि जयंती धूमधाम से मनाई जा रही है। वाल्मीकि जयंती प्रत्येक वर्ष आश्विन मास की पूर्णिमा को मनाई जाती है। इसे महर्षि वाल्मीकि प्रकट दिवस भी कहा जाता है। इस दिन वाल्मीकि मंदिरों को सजाया जाता है। मंदिरों में पूजा–अर्चना की जाती है। श्रद्धालु सभा का आयोजन करते हैं। मंदिरों में कीर्तन एवं रामायण का पाठ होता है। इस दिन शोभायात्रा भी निकाली जाती है।

योगी सरकार के आदेशानुसार राज्य के सभी जनपदों में वाल्मीकि जयंती हर्षोल्लास से मनाई जा रही है। महर्षि वाल्मीकि से संबंधित सभी स्थलों एवं मंदिरों में दीप प्रज्ज्वलन, दीपदान एवं रामायण के पाठ भी हो रहे हैं। यह कार्यक्रम जनपद, तहसील एवं विकास खंड स्तर पर आयोजित किए जा रहे हैं। इनके सफल आयोजन के लिए शासन ने विशेष प्रबंध किए हैं। आयोजन स्थलों पर स्वच्छता, पेयजल एवं विद्युत आदि का विशेष प्रबंध किया गया है। योगी सरकार ने इसके लिए अधिकारियों को विशेष निर्देश दिए हैं। समन्वय संस्कृति विभाग, सूचना एवं जनसंपर्क विभाग एवं पर्यटन एवं संस्कृति परिषद मिलकर कार्य कर रहे हैं। योगी सरकार धार्मिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों पर विशेष ध्यान दे रही है।

उल्लेखनीय है कि इससे पूर्व देश के अनेक स्थानों पर वाल्मीकि जयंती केवल वाल्मीकि समाज के लोगों तक ही सीमित थी। केवल वाल्मीकि मंदिरों में ही वाल्मीकि जयंती पर कार्यक्रमों का आयोजन होता था। पूर्वाग्रहों अथवा अपरिहार्य कारणों से वाल्मीकि जयंती मनाने का समाज में अधिक चलन नहीं था। किंतु प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और योगी आदित्यनाथ के प्रयासों ने वाल्मीकि जयंती व्यापक स्तर पर धूमधाम से मनाई जाने लगी है। अब यह एक बड़ा पर्व बन चुकी है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने वाल्मीकि जयंती पर लोगों को शुभकामनाएं देते हुए कहा था कि सामाजिक समानता और सद्भावना से जुड़े उनके अनमोल विचार आज भी भारतीय समाज को सिंचित कर रहे हैं। मानवता के अपने संदेशों के माध्यम से वे युगों–युगों तक हमारी सभ्यता और संस्कृति की अमूल्य धरोहर बने रहेंगे। महर्षि वाल्मीकि के विचार आज भी भारतीय समाज को प्रेरित करते हैं। महर्षि वाल्मीकि के आदर्श लाखों लोगों को प्रेरित करते हैं। महर्षि वाल्मीकि गरीब और दलितों के लिए आशा की किरण हैं। उनकी सरकार के कदम महर्षि वाल्मीकि के विचारों से प्रेरित हैं। भगवान राम के आदर्श आज भारत के कोने–कोने में एक–दूसरे को जोड़ रहे हैं, इसका बहुत बड़ा श्रेय महर्षि वाल्मीकि को ही जाता है।

भारतीय संस्कृति में महर्षि वाल्मीकि का योगदान

महर्षि वाल्मीकि का भारतीय संस्कृति में जो स्थान है, वह किसी अन्य को प्राप्त नहीं है। उन्हें आदिकवि भी कहा जाता है, क्योंकि उन्होंने रामायण नामक महाकाव्य की रचना की थी। यह संस्कृत का प्रथम महाकाव्य है।

धार्मिक पवित्र ग्रंथ रामायण की रचना करके वे घर–घर में विराजमान हो गए। उन्होंने रामायण की संस्कृत में रचना की थी। इसे वाल्मीकि रामायण भी कहा जाता है।

यह मौलिक ग्रंथ है। इसके पश्चात अनेक भाषाओं में रामायण लिखी गई, परंतु सबका आधार यही संस्कृत की वाल्मीकि रामायण ही थी। वाल्मीकि रामायण का अनेक भाषाओं में अनुवाद भी हो चुका है।

महर्षि वाल्मीकि ने रामायण के माध्यम से भगवान विष्णु के अवतार श्रीराम का जीवन दर्शन जनसाधारण तक पहुंचाने का कार्य किया। मान्यता है कि रामायण लिखने की प्रेरणा उन्हें एक पक्षी से प्राप्त हुई थी। एक समय की बात है कि वाल्मीकि ने एक वृक्ष की शाखा पर बैठे क्रौंच पक्षी के एक युगल को देखा। वह युगल प्रेमालाप में लीन था। वाल्मीकि उस युगल को एकटक निहार रहे थे, तभी नर पक्षी को बहेलिये का एक तीर आकर लगा और वह वहीं मृत्यु को प्राप्त हो गया। अपने साथी की मृत्यु पर मादा पक्षी वेदना से तड़प उठी और विलाप करने लगी। उसके वेदनापूर्ण विलाप को सुनकर वाल्मीकि को अत्यंत दुःख हुआ। वे उसकी पीड़ा से द्रवित हो उठे। इसी अवस्था में उनके मुख से स्वतः ही एक श्लोक निकला–

मा निषाद प्रतिष्ठां त्वंगमः शाश्वतीः समाः।
यत्क्रौंचमिथुनादेकं वधीः काममोहितम्।।

अर्थात हे दुष्ट, तुमने प्रेम में लीन क्रौंच पक्षी को मारा है। जा तुझे कभी भी प्रतिष्ठा की प्राप्ति नहीं होगी तथा तुझे भी वियोग झेलना पड़ेगा।

मान्यता यह भी है कि वाल्मीकि आदिकवि होने के साथ–साथ खगोल एवं ज्योतिष विद्या के भी ज्ञाता थे। इसका आधार यह है कि उन्होंने अनेक घटनाओं के समय सूर्य, चंद्र व अन्य नक्षत्र की स्थितियों का वर्णन किया है। ऐसा वही व्यक्ति कर सकता है, जिसे इन विद्याओं का ज्ञान हो।

महर्षि वाल्मीकि भारतीय संस्कृति के पुरोधा भी हैं। उन्होंने रामायण के माध्यम से श्रीराम के महान चरित्र से लोगों को अवगत करवाया है। उनके कारण ही अनंतकाल तक जनसाधारण श्रीराम से जुड़ा रहेगा। रामायण से ही हमें श्रीराम को जानने का अवसर प्राप्त हुआ है। वे एक आदर्श

पुत्र थे। उन्होंने अपने पिता राजा दशरथ के वचन का पालन करने के लिए अपना सबकुछ त्याग दिया। उन्होंने राजा दशरथ द्वारा अपनी पत्नी कैकेयी को दिए वचन को पूर्ण करने के लिए अपना राज सिंहासन त्याग कर चौदह वर्ष का वनवास प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार कर लिया। उन्होंने माता कैकेयी की प्रसन्नता के लिए वनवास स्वीकार किया। उन्होंने यह सिद्ध कर दिया कि उनके लिए पिता के वचन एवं माता की प्रसन्नता से अधिक कुछ भी महत्व नहीं रखता। उन्होंने वैभवशाली एवं ऐश्वर्य का जीवन त्याग दिया तथा वन में रहना उचित समझा। उन्होंने अपने पिता की मनोव्यथा एवं उनकी विवशता को हृदय से अनुभव किया। वे बिना किसी अन्तर्द्वन्द्व के वनवास के लिए चले गए। यह कोई सरल कार्य नहीं था, परंतु उन्होंने ऐसा कठोर निर्णय लिया। कुछ समय पूर्व ही उनका विवाह हुआ था। उन्हें अपनी पत्नी के साथ सुखमय दाम्पत्य जीवन का प्रारंभ करना था। श्रीराम के साथ–साथ उनकी पत्नी ने भी त्याग किया। जो सीता राजभवन में पली थीं। उन्होंने भी राजभवन का सुख त्याग कर पति के साथ वन में जाना चुना। इसी प्रकार श्रीराम के छोटे भ्राता लक्ष्मण ने भी अपने भाई और भाभी की सेवा के लिए वन में जाने का निर्णय लिया। वनवास तो केवल श्रीराम के लिए था, परंतु सीता और लक्ष्मण ने भी वनवास का स्वेच्छा से चयन करके यह सिद्ध कर दिया कि उनके लिए श्रीराम से बढ़कर कुछ भी नहीं है। भरत ने भी हाथ में आया राजपाट त्याग दिया तथा अपनी माता कैकेयी से स्पष्ट रूप से कह दिया कि राज सिंहासन पर केवल श्रीराम का ही अधिकार है। इसलिए वे इसे स्वीकार नहीं कर सकते। वास्तव में रामायण एक ऐसी कथा है, जो परिवार एवं समाज में आदर्श स्थापित करती है।

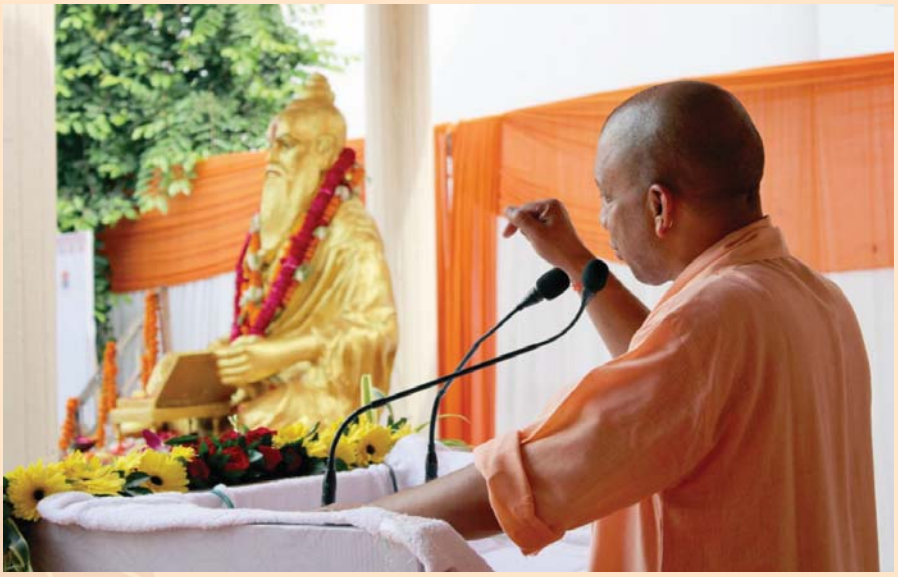

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के अथक प्रयासों से ही संभव हो रहा है। उत्तर प्रदेश की योगी सरकार राज्य में धार्मिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों को निरंतर प्रोत्साहित कर रही है। इसी कड़ी में महर्षि वाल्मीकि जयंती धूमधाम से मनाई जा रही है। वाल्मीकि जयंती प्रत्येक वर्ष आश्विन मास की पूर्णिमा को मनाई जाती है। इसे महर्षि वाल्मीकि प्रकट दिवस भी कहा जाता है। इस दिन वाल्मीकि मंदिरों को सजाया जाता है। मंदिरों में पूजा–अर्चना की जाती है। श्रद्धालु सभा का आयोजन करते हैं। मंदिरों में कीर्तन एवं रामायण का पाठ होता है। इस दिन शोभायात्रा भी निकाली जाती है।

किंवदंती है कि श्रीराम ने अपनी पत्नी सीता का त्याग कर दिया था। इस प्रकार माता सीता को पुनः वन में आना पड़ा। उस समय महर्षि वाल्मीकि ने माता सीता को अपने आश्रम में शरण दी थी। माता सीता अपना परिचय सबको नहीं देना चाहती थीं, इसलिए महर्षि ने उन्हें वन देवी का नाम दिया था। यहीं पर लव और कुश का जन्म हुआ था। यहीं लव और कुश ने अश्वमेघ यज्ञ के घोड़े को पकड़ा था और यहीं उनकी अपने पिता श्रीराम से भेंट हुई थी। महर्षि वाल्मीकि ने भारतीय जनमानस में राम के मर्यादित जीवन और सामाजिक जीवन को स्थापित किया। ◆

मो. : 8750820740

महाकुम्भ में दिखेगी सांस्कृतिक विरासत की झलक

—ए.के. अस्थाना

हमारी संस्कृति ही हमारी विरासत है, जिसे संभालना पूरे देश का कर्तव्य है प्रयागराज "महाकुम्भ" 2025 जहां करोड़ों श्रृद्धालु भाग लेंगे और जिसकी चर्चा चतुर्दिक हो रही है। तकरीबन डेढ़ माह तक चलने वाला ये धार्मिक समागम होगा। इस आयोजन के लिए तत्पर रहने वाले योगी आदित्यनाथ जी बड़ी तल्लीनता से लगे हुए हैं। इससे पूर्व भी उन्होंने कुम्भ के भव्य आयोजनों को किया था। सन् 2019 में हुए धार्मिक समागम से भी अत्यधिक भव्यता प्रदान करने का जिम्मा उन्होंने उठाया है। इस महाआयोजन में हर विभाग को व्यापक दिशा–निर्देश दिये हैं। प्रयागराज के अक्षय वट कॉरिडोर और हनुमान मंदिर कॉरिडोर के निर्माण का कार्य तो निरन्तर चल ही रहा है। दिसम्बर 2024 तक यह कार्य पूरा हो जाएगा। 45 दिन तक चलने वाले इस वृहद उत्सव में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने संदेश दिया है। गंगा–यमुना और सरस्वती के संगम की रेती पर लगने वाला महाकुम्भ इस बार बेहद खास और विविधतापूर्ण होगा। यह महाआयोजन धर्म अध्यात्म की पराकाष्ठा के लिए अगर जाना जाएगा तो इसमें साहित्य धारा का भी प्रवाह देखने को मिलेगा। साहित्य प्रेमी महाकुम्भ मेले में निराला, सुमित्रानंदन पंत, मैथिलीशरण गुप्त, महादेवी वर्मा दिनकर और अज्ञेय जैसे महान लेखकों और कवियों को उनकी मूल आवाज़ में सुन सकेंगे। आकाशवाणी दूरदर्शन का भी इलाहाबाद संग्रहालय की सरकार की योजना है।

स्वच्छता की ओर बल

महाकुम्भ मेले में श्रद्धालुओं एवं पर्यटकों के लिए बड़ी संख्या में आने को ध्यान में रखते हुए डेढ़ लाख शौचालयों एवं मूत्रालयों को स्थापित किया जा रहा है। स्वच्छता के मद्देनजर व्यापक तैयारी की जा रही है। इनकी स्वच्छता को ध्यान में रखते हुए तकनीकी का भी प्रयोग किया जा रहा है। सभी की निगरानी के लिए इसका दायित्व गंगा सेवा दूतों को सौंपा गया है। जो प्रातः एवं सायं इनकी जांच करेंगे। इस बार मैनुअल शौचालय स्वच्छ करने की जरूरत नहीं पड़ेगी। अपितु जेट स्प्रे क्लीनिंग सिस्टम से कुछ क्षणों में पूरी तरह उन्हें स्वच्छ कर दिया जायेगा।

महाकुम्भ की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की झलक दिखाने और देश दुनिया के गणमान्य व अति विशिष्ट लोगों को आमंत्रित करने के लिए नई दिल्ली में महाकुम्भ कांन्क्लेव का आयोजन किया भी जायेगा। दिल्ली के पांच सितारा होटल में भव्य स्तर पर एक दिवस कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा। यहां यात्री उत्तर प्रदेश की लोक कला व सांस्कृतिक छटा का भी आनन्द उठा सकेंगे।

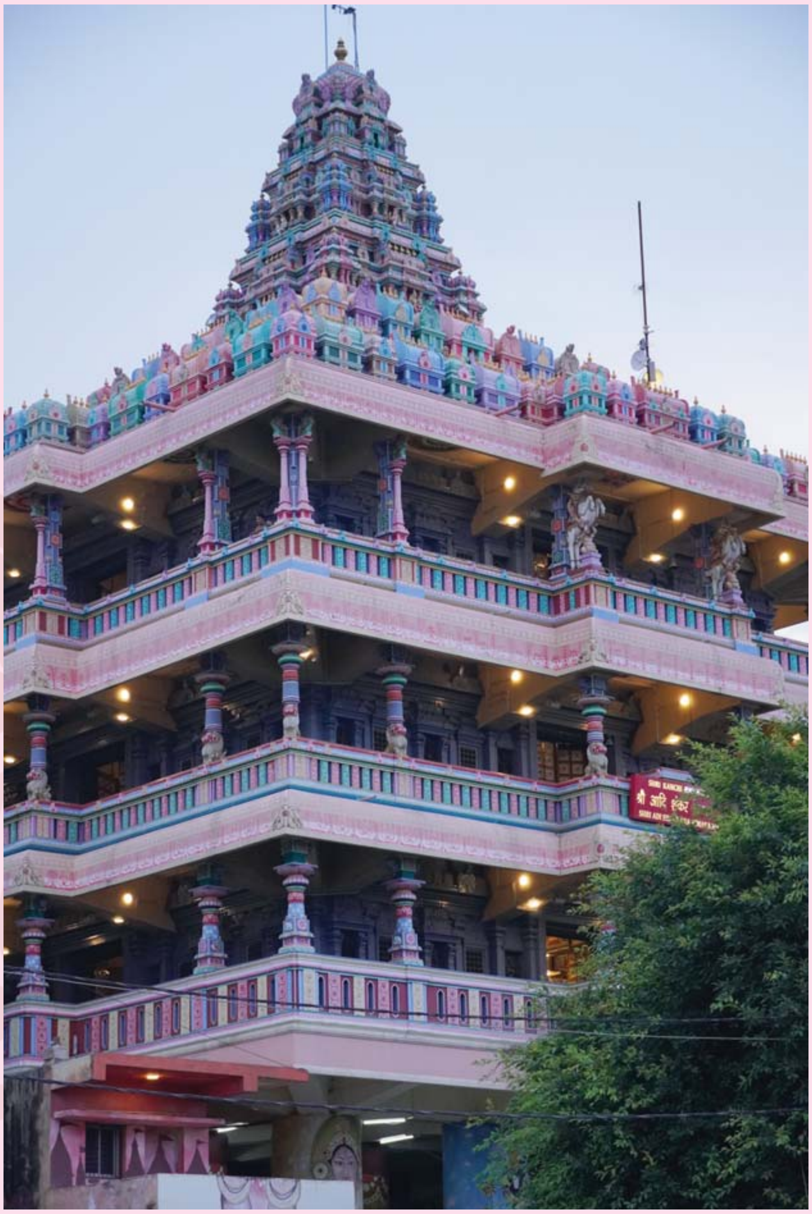

ब्रांडिंग का महाकुम्भ

महाकुम्भ दुनिया का सबसे बड़ा दिव्य और सांस्कृतिक आयोजन है। पूरी दूनिया से आये हुए श्रृद्धालु महाकुम्भ के अमृत का पान संगम में डुबकी लगाकर करते हैं। उत्तर प्रदेश सरकार ने महाकुम्भ कांक्लेव की योजना बनाई है। जो एक अनूठा इंटरैक्टिव सत्र होगा। इस जरिए भारतीय संस्कृति, धार्मिक परंपराओं और आधुनिक तकनीकों के माध्यम से आगंतुकों को भी अविस्मरणीय अनुभव प्रदान किए जायेगें। महाकुम्भ कांक्लेव उत्तर प्रदेश की सांस्कृतिक समृद्धि और प्रशासनिक कुशलता का उदाहरण पेश करना है। इस आयोजन का उद्देश्य न केवल धार्मिक बल्कि वैश्विक स्तर पर राज्य की ब्रांडिग करना भी है।

प्रयागराज के लिए मेमू ट्रेन लखनऊ समेत कई शहरों की सौगात

महाकुम्भ 2025 को लेकर रेलवे लखनऊ समेत कई शहरों के लिए मेमू ट्रेन का संचालन करेगी। इसकी जानकारी यात्रियों को मिले, इनको पहले से ही चलाने की योजना है। लखनऊ से प्रयागराज तक दिसंबर के दूसरे सप्ताह से मेमू ट्रेन को चलाये जाने की योजना है। इसके अलावा बनारस, अयोध्या, सुल्तानपुर, प्रतापगढ़, कानपुर, गाजीपुर बलिया व आजमगढ़ से भी कई पैसेंजर और मेमू ट्रेन को चलाये जाने की योजना है। अनुमानित दृष्टिकोण से इस बार 50 करोड़ श्रद्धालुओं और पर्यटकों के आने की सम्भावना है। प्रयागराज के लिए मेमू ट्रेनों का संचालन किया जाए। विभिन्न शहरों में करीब 100 से ज्यादा मेमू ट्रेन दौड़ सकती हैं।

महाकुम्भ में प्रयागराज के अलावा अयोध्या और वाराणसी में जाने वाले लोगों की भीड़ रहती है। रेलवे में योजना है कि इन तीनों शहरों को कनेक्ट करने वाली ट्राएंगलर ट्रेनों का संचालन किया जाये इसके लिए भी बोर्ड से डिमांड की गई है।।

डिस्प्ले जोन बड़ी एलई डी स्क्रीन पर कुम्भ मेला की कहानी, नागा साधुओं व विभिन्न अखाड़ों के संन्यासियों के जीवन और अन्य धार्मिक पहलुओं को दर्शाने वाले एनीमेशन का चित्रण होगा।

3डी मॉडल : त्रिवेणी संगम अक्षयवट और समुद्र मंडन के दृश्यों को थ्री डी मॉडलस के माध्यम से दर्शाया जायेगा।

आधुनिक नवाचार : एआई चौटवॉट और मल्टी लैंग्वेज ट्रांसलेटर डिवाइस का भी प्रदर्शन किया जायेगा जो अंतर्राष्ट्रीय आगंतुकों को सहज अनुभव प्रदान करेगी।

पर्यटन पैकेज की जानकारी यात्रा और आवास सुविधाओं का डिजिटल प्रस्तुतीकरण किया जायेगा। बाकायदा टेंट सिटी व होटल रूम का एक सेटअप स्थापित किया जाएगा। जिससे कल्पवास के दौरान मिलने वाली सुविधाओं को प्रत्यक्ष तौर पर आगंतुक देख सकेंगे।

डिजिटल वॉक : कार्यक्रम के अन्तर्गत 10 मिनट के वर्चुअल वॉक थ्रू सेशन का आयोजन भी किया जाएगा। जिसके जरिये आगंतुकों को मेला क्षेत्र के विभिन्न हिस्सों की जानकारी मिल सकेगी।

महाकुम्भ कॉन्क्लेव उत्तर प्रदेश की सांस्कृतिक समृद्धि और प्रशासनिक कुशलता का उदाहरण पेश करेगा। इस आयोजन का उद्देश्य न केवल धार्मिक पर्यटन को बढ़ावा देना है, बल्कि वैश्विक स्तर पर राज्य की ब्रांडिंग करना भी है।

550 शटल बसे चलेंगी आठ अस्थाई बस अड्डे बनेंगे

परिवहन निगम भी महाकुम्भ से सात हजार बसों का संचालन करेगा। इसके अलावा 550 शटल बसें भी चलाई जायेंगी। परिवहन निगम के एमडी मासूम अली सरवर ने कहा है कि 8 अस्थाई बस स्टेशन बनाये जायें। झूँसी बस स्टेशन दुर्जनपुर बस स्टेशन सरस्वती गेट बस स्टेशन नेहरू पार्क सब स्टेशन, बेली कछार बस स्टेशन, सरस्वती हाइटेक सिटी मेमू और लेप्रोसी मिशन बस स्टेशन है। डिजिटल

कार्यक्रम में समुद्र मंथन से प्राप्त 14 रत्नों के थ्रीडी मॉडल की नुमाइश होगी तथा सांस्कृतिक संध्या में उत्तर प्रदेश के लोक संगीत और नृत्य की प्रस्तुति भी होगी, जो महाकुम्भ की आध्यामिकता को सजीव करेगी साथ ही, प्रत्येक अतिथि को यूपी की सांस्कृतिक धरोहर के प्रतीक के रूप में स्मृति चिह्न प्रदान किया जायेंगे। ◆

मो. : 8934884441

उ.प्र. रेरा

'रेरा है तो भरोसा है'

होम बायर्स के लिए सावधानियाँ

- विज्ञापन में परियोजना की रेरा पंजीकरण संख्या तथा उ.प्र. रेरा पोर्टल न अंकित हों तो ऐसी परियोजना में बुकिंग न करें और ऐसे प्रोमोटर अथवा एजेण्ट के साथ कोई लेन-देन न करें।
- उ.प्र. रेरा वेब पोर्टल https://www.up-rera.in/projects पर परियोजना की पंजीयन संख्या तथा अन्य जानकारियां प्राप्त करें।
- किसी भी एजेण्ट के माध्यम से बुकिंग से पहले एजेण्ट के पंजीकरण संख्या की जाँच उ.प्र. रेरा की वेबसाइट पर कर लें।
- परियोजना का भू-क्षेत्र 500 वर्ग मी. से अधिक होने अथवा उसमें आठ से अधिक अपार्टमेन्ट होने पर रेरा में पंजीकरण बिना प्रोमोटर अथवा एजेण्ट द्वारा किसी प्रकार का विज्ञापन, बुकिंग, विक्रय इत्यादि प्रतिबन्धित है। इसका विशेष ध्यान रखें।
- प्रोमोटर अथवा एजेण्ट के लुभावने ऑफर्स से प्रभावित होकर जल्दबाजी में बुकिंग अथवा निवेश न करें। ऐसा निर्णय जोखिम भरा हो सकता है।

रियल इस्टेट एजेण्ट के कार्य तथा दायित्व

- उ.प्र. रेरा में पंजीकरण कराने के पश्चात् तथा प्रोमोटर द्वारा प्रचार-प्रसार, बुकिंग, इत्यादि के लिए प्राधिकृत किए जाने के उपरान्त ही कार्य करें।
- प्रोमोटर द्वारा प्रमाणित विज्ञापन सामग्री का ही उपयोग करें।
- परियोजनाओं का विज्ञापन एवं प्रचार-प्रसार करते समय परियोजना की रेरा पंजीयन संख्या, उ.प्र. रेरा पोर्टल तथा एजेण्ट पंजीयन संख्या का प्रमुखता से उल्लेख करें।
- आवंटी को समस्त जानकारियां ठीक प्रकार से दें।
- फेसबुक, इंस्टाग्राम, यूट्यूब सहित सोशल मीडिया के किसी भी प्लेटफॉर्म पर बनाए गए पेज पर परियोजना के प्रचार-प्रसार के क्रिएटिव या विवरण में अपनी एजेण्टशिप का पूरा नाम तथा पंजीकरण संख्या, परियोजना की पंजीकरण संख्या और उ.प्र. रेरा वेबसाइट का अनिवार्य रूप से उल्लेख करें।
- भ्रामक, अस्पष्ट सुविधाओं एवं विशिष्टियों का प्रचार-प्रसार न करें।
- किसी ऐसी सेवा का आश्वासन न दें, जिसका दिया जाना अपेक्षित नहीं है।

अधिक जानकारी की लिए विजिट करें - https://www.up-rera.in
हेल्पलाइन नं.- +91 9151602229 (लखनऊ), +91 9151672229 (एन.सी.आर.)

फॉलो एवं सब्सक्राइब करें : UPRERAOfficial

उ.प्र. भू-सम्पदा विनियामक प्राधिकरण

मुख्यालय : नवीन भवन, राज्य नियोजन संस्थान, कालाकांकर हाउस, पुराना हैदराबाद, लखनऊ-226007
एन.सी.आर. कार्यालय : एच-169, गामा-2, ग्रेटर नोएडा, गौतमबुद्धनगर-201310

जागरूक बनें जिम्मेदारी निभाएं

हाई सिक्योरिटी रजिस्ट्रेशन प्लेट की बुकिंग से पूर्व निम्न बातों का अवश्य रखें ध्यान

IND AA 123457

1. हाई सिक्योरिटी रजिस्ट्रेशन प्लेट की बुकिंग केवल ऑनलाइन की जा सकती है। किसी भी अन्य प्रकार से इसकी बुकिंग अथवा इसका लगाया जाना अमान्य है।
2. बुकिंग के लिए SIAM की वेबसाइट htttps://www.siam.in/ ही अधिकृत है। अन्य किसी स्रोत का चयन न करें। इसका लिंक परिवहन विभाग की वेबसाइट http://uptransport.upsdc.gov.in/ पर भी उपलब्ध है।
3. SIAM की उक्त वेबसाइट पर BOOK HSRP लिंक पर अपने वाहन निर्माता के उपलब्ध डीलर का चयन करते हुए पिनकोड अंकित करें।
4. आवेदन से पूर्व सुनिश्चित करें कि वाहन पर कोई चालान लम्बित न हो।
5. प्लेट फिक्स कराने हेतु सुविधानुसार अपॉइंटमेंट की तिथि एवं समय के स्लॉट का चयन करें।
6. चयनित तिथि एवं समय पर चुने गए डीलर से अपने वाहन में हाई सिक्योरिटी रजिस्ट्रेशन प्लेट फिक्स करायी जा सकती है।
7. केवल ऑनलाइन शुल्क का ही भुगतान करें। किसी नकद धनराशि का भुगतान न करें।
8. हाई सिक्योरिटी रजिस्ट्रेशन प्लेट फिक्स करने से पूर्व डीलर चेसिस नम्बर के आधार पर यह सुनिश्चित करेंगे कि वाहन वही है, जिसकी नम्बर प्लेट बुक की गयी है।
9. आवेदक हाई सिक्योरिटी रजिस्ट्रेशन प्लेट लगवाने के पश्चात पंजीयन पुस्तिका (Registration Certificate) का प्रिंट https://vahan.parivahan.gov.in/ से प्राप्त कर हाई सिक्योरिटी रजिस्ट्रेशन प्लेट पर लिखे लेजर कोड का मिलान पंजीयन पुस्तिका (Registration Certificate) में प्रिंट लेजर कोड से अवश्य कर लें।
10. पंजीयन पुस्तिका में लेजर कोड अंकित न होने या भिन्नता अथवा अन्य किसी कठिनाई की दशा में तत्काल सम्बन्धित जनपद के ARTO (A) के ई–मेल, जो वेबसाइट http://uptransport.upsdc.gov.in/ पर भी उपलब्ध है, पर सम्पर्क करें।
11. समाधान न होने की दशा में ई–मेल atc.revenue-up@nic.in पर सम्पर्क करें।
12. फर्जी एच.एस.आर.पी. लगाने वालों से सावधान, केवल ऑनलाइन SIAM की वेबसाइट से ही बुकिंग करें।
13. एच.एस.आर.पी. न लगे होने पर ₹5,000 दंड का प्रावधान है, अतः बचाव हेतु तत्काल ऑनलाइन बुकिंग कर एच.एस.आर.पी. लगवाएं।

108 EMERGENCY | 112 EMERGENCY | हेल्पलाइन नम्बर **1800-1800-151**

up_transport_department | uptransportofficial | uptransportdept | uptransportdept

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उ.प्र. स्वत्वाधिकारी के लिए शिशिर, निदेशक, सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उ.प्र. लखनऊ द्वारा प्रकाशित तथा प्रकाश एन. भार्गव, प्रकाश पैकेजर्स, लखनऊ द्वारा मुद्रित एवं प्रभारी सम्पादक : दिनेश कुमार गुप्ता